कार्ल मार्क्स

जीवन और शिक्षाएँ

ज़ेल्डा काहन–कोट्स



हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविता, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत, हर रविवार पुस्तकों की पीडीएफ
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ व यूनिकोड फॉर्मेट में



मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें - 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul







कार्ल मार्क्स
जीवन और शिक्षाएँ

ज़ेल्डा काहन-कोट्स



राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-93-80303-01-7

मूल्य : रु. 25.00

पहला संस्करण : जनवरी 2017

प्रकाशक **: राहुल फ़ाउण्डेशन**
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ-226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण **: रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : लक्ष्मी ऑफ़सेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ

Karl Marx: Jeevan aur Shikshayein *by* ***Zelda Kahan-Coates***

प्रकाशकीय

मानव मुक्ति का वैज्ञानिक दर्शन और विचारधारा देने वाले विश्व सर्वहारा के महान शिक्षक कार्ल मार्क्स की यह प्रसिद्ध जीवनी हिन्दी में प्रस्तुत करते हुए हमें बेहद ख़ुशी हो रही है।

मार्क्स और उनके अभिन्न मित्र एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग के शोषण और पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में अन्तर्निहित अराजकता एवं अन्तरविरोधों को उजागर करते हुए यह दिखलाया कि किस तरह पूँजीपति द्वारा हड़पा जाने वाला अतिरिक्त मूल्य मज़दूरों के शोषण से आता है। उन्होंने राजनीति, साहित्य–कला–संस्कृति, सौन्दर्यशास्त्र, विधिशास्त्र, नीतिशास्त्र – सभी क्षेत्रों में चिन्तन एवं विश्लेषण की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी पद्धति को स्थापित करके वैज्ञानिक समाजवाद के विचार को समृद्ध किया। मार्क्स और एंगेल्स ने अपने समय की पूँजीवादी क्रान्तियों, सर्वहारा संघर्षों और उपनिवेशों में जारी प्रतिरोध संघर्षों एवं राष्ट्रीय मुक्तियुद्धों का सार–संकलन किया, मज़दूर आन्दोलन को सिर्फ़ सुधारों तक सीमित रखकर मूल लक्ष्य से च्युत कर देने के अवसरवादियों के प्रयासों की धज्जियाँ उड़ा दीं, पूँजीवादी बुद्धिजीवियों और भितरघातियों की संयुक्त बौद्धिक शक्ति का मुक़ाबला करते हुए राज्य और क्रान्ति के बारे में मूल मार्क्सवादी स्थापनाओं को निरूपित किया और सर्वहारा वर्ग के दर्शन को समृद्ध करने के साथ ही उसे रणनीति एवं रणकौशलों की एक मंजूषा भी प्रदान की। उन्होंने सर्वहारा क्रान्ति के बुनियादी नियमों की मीमांसा प्रस्तुत की। ऐसा करते हुए मार्क्स–एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग को संगठित करने के प्रयास लगातार जारी रखे और पहले इण्टरनेशनल के गठन में नेतृत्वकारी भूमिका निभायी। सर्वहारा वर्ग द्वारा राज्यसत्ता पर क़ब्ज़ा करने के पहले महाकाव्यात्मक प्रयास का समाहार करते हुए मार्क्स ने पहली बार पूँजीवादी राज्य और उसके स्थान पर स्थापित होने वाले सर्वहारा अधिनायकत्व के आधारभूत सिद्धान्त विकसित किये। मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स ने उनके अधूरे सैद्धान्तिक कामों को पूरा किया, सर्वहारा विचारधारा की हिफ़ाज़त की और मार्क्स के अवदानों का वस्तुपरक ऐतिहासिक मूल्यांकन करते हुए उन्होंने ही उसे मार्क्सवाद का नाम दिया।

ज़ेल्डा कोट्स की लिखी मार्क्स की यह छोटी–सी जीवनी गागर में सागर भरने की तरह पाठक के सामने मार्क्स के जीवन की एक तस्वीर पेश करने के साथ ही उनकी प्रमुख कृतियों और शिक्षाओं से परिचय भी कराती चलती है। ज़ेल्डा कोट्स ने एंगेल्स की भी ऐसी ही शानदार जीवनी लिखी है जिसे हम पहले ही राहुल फाउण्डेशन से

प्रकाशित कर चुके हैं।

ज़ेल्डा काहन (1886–1969) एक ब्रिटिश कम्युनिस्ट थीं। उनका जन्म रूस में हुआ था लेकिन बचपन में ही उनका परिवार ब्रिटेन जाकर बस गया था। युवावस्था में ही वह एक सक्रिय समाजवादी बन गयी थीं और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना में भूमिका निभायी। एक कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता विलियम पेयटन कोट्स से शादी के बाद उनका नाम ज़ेल्डा काहन-कोट्स हो गया। उन्होंने कम्युनिज़्म को लोकप्रिय बनाने और सोवियत संघ के बारे में कई पुस्तकें लिखीं। हमें आशा है कि पाठकों को मार्क्स के जीवन और विचारों से परिचित कराने में यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—– राहुल फ़ाउण्डेशन

20.12.16

अनुवादक की ओर से

मार्क्स के समर्थकों और विरोधियों दोनों में ही एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जिनका समर्थन या विरोध मार्क्स और मार्क्सवाद के बारे में प्रत्यक्ष व्यक्तिगत जानकारी और समझ के बजाय सुनी-सुनायी बातों पर आधारित होता है। मार्क्स के स्वयं के लेखन और उनके बारे में लिखी गयी सामग्री को पूरी तरह पढ़कर समझने लायक अवकाश एवं धैर्य बहुत कम लोगों के पास होता है। ऐसे में कुछ ऐसी सामग्री की आवश्यकता अनुभव होती है जो कम समय और कम परिश्रम में जनसामान्य को मार्क्स और मार्क्सवाद की बुनियादी समझ से लैस कर सके। जो मार्क्सवाद की प्रवेशिका या 'प्राइमर' की भूमिका निभा सके। हिन्दी में शिववर्मा और सव्यसाची ने इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं। परन्तु उनके लेखन की अपनी सीमाएँ हैं।

कुछ प्रबुद्ध मित्रों के सुझाव और सहयोग से जेल्डा काहन कोट्स लिखित मार्क्स की जीवनी जब उपलब्ध हुई तो लगा कि यह पुस्तक यदि हिन्दी में सुलभ हो तो एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो सकती है। यह पुस्तक मार्क्स के जीवन-संघर्ष और उनकी विचारधारा को अत्यन्त सरल-सहज और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है। यह तय हुआ कि इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करके उसे प्रकाशित किया जाये। अनुवाद हो भी गया। परन्तु अपरिहार्य कारणों से प्रकाशन टलता रहा और लगभग तीन वर्ष का लम्बा समय निकल गया। इसी बीच एक अन्य सज्जन से सम्पर्क हुआ जो प्रकाशन की दुनिया में प्रवेश करने जा ही रहे थे। उनसे बात करके ऐसा लगा कि यह जीवनी जनसुलभ मूल्य पर प्रकाशित हो जायेगी और मैंने अपनी स्वीकृति दे दी। प्रकाशन हो भी गया। परन्तु जल्दी ही कुछ ऐसा लगने लगा कि सब कुछ इतना आसान नहीं होता। पुस्तक का मूल्य भले ही कम रखा गया था परन्तु सुलभ वह अब भी नहीं हो पा रही थी। एक आध मित्र ने शिकायत की तो मैंने उन्हें अपने पास से एक प्रति दे दी। परन्तु सभी लोग तो मुझसे कह भी नहीं सकते थे (क्योंकि पुस्तक में मेरा कोई सम्पर्क

सूत्र दिया ही नहीं गया था) न ही मैं उन सबको अपने पास से प्रतियाँ वितरित कर सकता था। ऐसे में इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन का मूल उद्देश्य ही निष्फल हुआ जा रहा था।

राहुल फ़ाउण्डेशन के साथी पिछले 20 वर्षों से मार्क्सवादी और प्रगतिशील साहित्य के प्रकाशन के काम को बहुत व्यवस्थित ढंग से कर रहे हैं और ऐसे साहित्य को व्यापक स्तर पर लोगों को सुलभ कराने के लिए काम कर रहे हैं। यहाँ से इस पुस्तक का प्रकाशन इस अनमोल कृति को हिन्दी के पाठकों के लिए सर्वसुलभ बनायेगा ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है।

– **अमर नदीम**

20 दिसम्बर 2016

पताः 7, सरस्वती विहार, रामघाट रोड, अलीगढ़–202001
फोनः 9756720422 ईमेलः amarjyoti55@gmail.com

कार्ल मार्क्स – जीवन और शिक्षाएँ

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 को ट्रीव्ज में हुआ था। उनके पिता स्थानीय अदालत में एक प्रमुख यहूदी वकील और पब्लिक नोटरी थे। वे एक प्रतिभा के धनी, उच्च–शिक्षा प्राप्त और 18वीं शताब्दी के फ़्रांस के प्रगतिशील विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति थे। 1824 में प्रशाई के एक सरकारी फ़रमान के अनुसार सारे यहूदियों के लिए बपतिस्मा करवाना (ईसाई बनना) अनिवार्य कर दिया गया और इस फ़रमान के उल्लंघन का दण्ड था सारे राजकीय पदों/हैसियतों से हाथ धो बैठना। एक स्वतन्त्र चिन्तक और वाल्तेयर के अनुयायी होते हुए भी मार्क्स के पिता ने अपना व्यवसाय छोड़ने और इस तरह अपने परिवार को बरबाद करने की अपेक्षा फ़रमान के आगे समर्पण करने का रास्ता चुना। कार्ल मार्क्स की माँ हंगेरियन मूल की एक डच यहूदी महिला थीं जिनके पूर्वज यहूदी धर्मगुरु हुआ करते थे।

कम उम्र में ही कार्ल मार्क्स की प्रखर बौद्धिक सम्भावनाएँ ज़ाहिर हो गयी थीं और सौभाग्य से उनके माता–पिता उनके सांस्कृतिक विकास के लिए सभी प्रोत्साहन और अवसर उपलब्ध कराने में समर्थ थे। उनके पिता ने उन्हें रेसिन और वाल्तेयर पढ़कर सुनाये और कम उम्र में ही फ़्रांसीसी गौरव–ग्रन्थों से परिचित करा दिया; और दूसरी ओर उनकी भावी पत्नी के पिता लुडविग वॉन वेस्टफालेन के घर पर उन्होंने होमर और शेक्सपियर से प्यार करना सीखा। श्रमजीवी वर्ग के प्रति उनकी गहरी हमदर्दी, और उनका क्रान्तिकारी उत्साह पूर्णतया तर्क, अन्तर्दृष्टि और अध्ययन पर आधारित थे न कि कोरी भावुकता, वर्गीय संस्कारों या व्यक्तिगत दुखों–कष्टों पर। फिर भी वे कोई भावनाविहीन दार्शनिक, रूखे वैज्ञानिक, या इतिहास की चीर–फाड़ करने वाले निर्लिप्त अध्येता मात्र तो नहीं ही थे। उनके सभी निजी मित्र और उनका अपना जीवन इस बात का प्रमाण देते हैं कि वे अपने समकालीन डार्विन की भाँति एक विशेषज्ञ भर नहीं थे, अपितु प्रखर प्रतिभाशाली

होने के साथ ही साथ मानवीय प्यार, जोश, और कमजोरियों से भरपूर एक सम्पूर्ण मनुष्य थे। एक रोचक तथ्य यह भी है कि उनके प्रारम्भिक साहित्यिक प्रयास कविता के क्षेत्र में थे।

उनकी बेटी एलिनोर बताती हैं कि "मार्क्स के सहपाठी उन्हें प्यार भी करते थे और उनसे भयभीत भी रहते थे – प्यार इसलिए क्योंकि मार्क्स लड़कों की शरारतों में शामिल होने को हमेशा तैयार रहते थे और भयभीत इसलिए क्योंकि वे चुभती हुई व्यंग कविताएँ लिखते थे और अपने विरोधियों का जमकर मखौल उड़वाते थे।" जीवन भर कविता, कला और संगीत में उनकी गहरी दिलचस्पी बनी रही। होमर, दान्ते, शेक्सपियर, सर्वेन्टीज, बाल्ज़ाक, शेड्रिन, और पुश्किन उनके प्रिय लेखक थे। तत्कालीन जर्मनी के सभी क्रान्तिकारी कवियों – हाइने, फ़्रेलीग्राथ, और वीर्ह्ट से तो उनकी व्यक्तिगत मित्रता थी; मार्क्स ने उन्हें न केवल उनकी अनेक क्रान्तिकारी कविताओं के लिए प्रेरित किया था बल्कि जब वे हाइने के साथ पेरिस में थे तो अक्सर हाइने को अपनी कविताओं की पंक्तियाँ परिमार्जित करने में सहायता करते थे; कभी-कभी तो किसी कविता के एक-एक शब्द को लेकर उनके बीच तब तक विचार-विमर्श चलता रहता था जब तक कि पूरी कविता ही स्पष्ट और परिष्कृत न हो जाये। मार्क्स लगभग आधा दर्जन भाषाएँ जानते थे और साहित्यिक फ़्रेंच और अंग्रेज़ी तो मूल भाषा-भाषियों की तरह लिख सकते थे; विज्ञान की प्रगति में भी उनकी गहरी रुचि थी। लीबनेख़्त बताते हैं कि जब 1850 में बिजली का पहला इंजन प्रदर्शित किया गया तो मार्क्स कितने जोश से भर गये थे। एंगेल्स ने काफ़ी ज़ोर देकर उस ख़ुशी का वर्णन किया है जो मार्क्स को तब होती थी जब सैद्धान्तिक विज्ञान के क्षेत्र में कोई नयी खोज सामने आती थी; यद्यपि एंगेल्स आगे कहते हैं कि ये ख़ुशी उस उल्लास के सामने कुछ भी नहीं थी जो मार्क्स तब अनुभव करते थे जब ऐसी खोज तत्काल ही उद्योगों में प्रयुक्त भी होकर सामाजिक विकास में योगदान करने लगती थी। जब 1859 में डार्विन की *ऑरिजिन ऑफ़ स्पेसीज़* प्रकाशित हुई तभी, बल्कि उससे पहले ही मार्क्स ने डार्विन के काम के युगान्तरकारी महत्व को पहचान लिया था और महीनों तक जर्मन प्रवासियों के बीच डार्विन के अतिरिक्त और किसी विषय की चर्चा ही नहीं हुई।

ये उल्लेख हम मार्क्स के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त इस प्रचलित धारणा के खण्डन के लिए भी कर रहे हैं कि मार्क्स एक

"रूखे-सूखे" अर्थशास्त्री भर थे। मार्क्स की कृतियों के बारे में हम आगे चलकर चर्चा करेंगे, पर यहाँ इतना तो कहा ही जा सकता है कि यद्यपि मार्क्स भी अर्थशास्त्रीय विज्ञान को एकदम सरल तो नहीं बना सकते थे, फिर भी विषय के अपेक्षतया अधिक औपचारिक पहलुओं की चर्चा भी उन्होंने वैसे नीरस ढंग से नहीं की जैसे कि पुराने अर्थशास्त्रियों ने। "पूँजी" तक के ऐतिहासिक अनुच्छेद भी मानवीय संवेदना और समझ से भरपूर हैं; दृष्टान्त इतने उपयुक्त हैं, व्यंग इतना सहज और सटीक, कि औसत बुद्धिमत्ता और सामान्य प्राथमिक शिक्षा वाले किसी मज़दूर को भी उनकी रचनाओं के अध्ययन से घबराने की आवश्यकता नहीं है; बशर्ते कि उसमें एकाग्रचित्त होने की क्षमता और सीखने की लगन हो।

प्रारम्भिक राजनीतिक गतिविधियाँ

मार्क्स 16 वर्ष की आयु में बोन विश्वविद्यालय में दाख़िल हुए, और 1836 में अपने पिता की इच्छानुसार क़ानून की पढ़ाई करने के लिए बर्लिन विश्वविद्यालय चले गये, पर ऐसा लगता नहीं कि उन्होंने अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान दिया हो। उनका मन दर्शनशास्त्र में अधिक लगता था और यद्यपि उनके माता-पिता तो निराश हुए पर विश्व को निस्सन्देह इससे बहुत लाभ मिला कि युवा मार्क्स दर्शनशास्त्र के एक उत्साही अध्येता बन गये और बर्लिन की यंग हीगेलियन्ज़् की जमात में शामिल हो गये। वहाँ उनका परिचय कहीं अधिक वरिष्ठ लोगों जैसे ब्रूनो बावेर और एफ़ कोपेन्स से हुआ जिन्होंने जल्दी ही इस युवा अध्येता की प्रतिभा को पहचान लिया; यद्यपि आगे चलकर उनके मार्क्स से बहुत ही आधारभूत मतभेद होने वाले थे। उस समय भी मार्क्स की ज्ञान की प्यास असीम थी और उनकी काम करने और आत्मलोचना की क्षमता, और किसी भी दार्शनिक इतिहास सम्बन्धी प्रश्नों के समाधान की दिशा में सारे ही तथ्यों पर बारीकी से ध्यान देने की उनकी क्षमता अद्‌भुत थी। 1841 में मार्क्स ने अपनी डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर ली और विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रवक्ता के रूप में जमने की योजना बनाने लगे पर अपने मित्र बावेर, जो वहीं एक अराजकीय प्रवक्ता थे और अधिकारियों द्वारा आये दिन प्रताड़ित किये जाते थे, के अनुभव से मार्क्स ने समझ लिया कि वे ऐसी अवस्थिति में टिक नहीं पायेंगे। उसी वर्ष राइनिश बुर्जुआ वर्ग ने एक नया विपक्षी अख़बार *राइनिश ज़ाइटुंग* प्रारम्भ

किया और यद्यपि मार्क्स की आयु उस समय मात्र 24 वर्ष थी, उन्हें अख़बार का सम्पादक नियुक्त किया गया। उनके सम्पादन का दौर सेंसरशिप के विरुद्ध एक अनवरत संघर्ष रहा। एंगेल्स के शब्दों में, "मगर सेंसरशिप *राइनिश ज़ाइटुंग* से छुटकारा नहीं पा सकी।" मार्क्स की लोगों को प्रभावित करने और अपने पक्ष में कर सकने की अद्भुत क्षमता यहाँ भी भलीभाँति दिखायी दी। सेंसर ने अनेक ऐसे अंश प्रकाशित हो जाने दिये जिनसे बर्लिन के अधिकारीगण अप्रसन्न हो गये। सेंसरकर्ता न सिर्फ़ फटकारे जाते रहे बल्कि लगातार बदले भी जाते रहे, पर कोई अन्तर नहीं पड़ा और अन्ततः सरकार ने इस सरदर्द से छुटकारा पाने का सबसे अच्छा और सुनिश्चित तरीक़ा अपनाया। *राइनिश ज़ाइटुंग* का पूरी तरह दमन कर दिया गया। उसी समय मार्क्स को तथाकथित भौतिक हितों को लेकर विवाद, जंगलात की चोरियों, मुक्त व्यापार, संरक्षण जैसे मुद्दों को लेकर हुए विवादों पर जिस उलझन का सामना करना पड़ा उससे उन्हें आर्थिक प्रश्नों का अध्ययन करने की पहली प्रेरणा मिली।

विवाह

लगभग उसी समय मार्क्स ने अपनी सखी और बचपन और युवावस्था की साथी, जेनी वोन वेस्टफालेन से शादी कर ली जो कि ख़ुद भी बहुत ही बुद्धिमती और सुशिक्षित महिला थीं। मार्क्स को उनसे बेहतर जीवनसाथी मिल ही नहीं सकता था। विवाह के दिन से अपनी मृत्यु के दिन तक वे अपने पति के सारे सुख-दुख, सारी आशाओं-आकांक्षाओं की सहभागी रहीं। वे दोनों एक-दूसरे के लिए समर्पित थे। मेहरिंग के कथनानुसार इस घोर नास्तिक और कम्युनिस्ट के एक कट्टर विरोधी ने भी इस विवाह को ईश्वर द्वारा नियोजित बताया था।

एंगेल्स से मुलाकात

राइनिश ज़ाइटुंग के दमन के पश्चात मार्क्स और उनकी पत्नी पेरिस चले गये। वहाँ मार्क्स ने कुछ समय के लिए *फ़्रान्ज़ोसिशे ज़ारबुख़ेर डायचे* में और बाद में पेरिस *वोर्वेर्ट्स* में काम किया। पहले अख़बार में काम करते समय मार्क्स फ़्रेडरिक एंगेल्स से परिचित हुए और तभी से दोनों अनन्यतम व्यक्तिगत,

राजनीतिक और साहित्यिक मित्र बन गये। इसी समय तक मार्क्स अपनी भौतिकवादी अवधारणाओं की आधारभूत शुरुआत कर चुके थे जिनकी चर्चा हम आगे चलकर करेंगे। इस शुरुआत तक मार्क्स मुख्यतया दर्शनशास्त्र के माध्यम से पहुँचे थे।

दूसरी ओर एंगेल्स, जो कि एक लम्बे समय तक आधुनिक उद्योग की जन्मभूमि इंग्लैण्ड में रह चुके थे, समान निष्कर्षों पर इंग्लैण्ड के औद्योगिक जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों के अध्ययन से पहुँचे थे। इस तरह दोनों एक–दूसरे के पूरक थे और दोनों ने मिलकर वह कर दिखाया जो अकेले के लिए असम्भव न भी हो तो कहीं अधिक कठिन तो अवश्य ही होता। अब से वे दोनों लगभग प्रतिदिन ही सम्पर्क में बने रहे, चाहे व्यक्तिगत रूप से या पत्रों के माध्यम से, और उनके ये साहित्यिक सम्बन्ध कितने रोचक और घनिष्ठ थे, यह कुछ वर्ष पूर्व जर्मनी में बेबेल और बर्नस्टीन द्वारा चार खण्डों में प्रकाशित उनके पत्रों से पता चल जाता है। मार्क्स ने अपने सम्मिलित काम के सैद्धान्तिक पक्ष के अध्ययन और शोध पर ध्यान केन्द्रित किया तो वहीं एंगेल्स ने अपनी ऊर्जा अपने सैद्धान्तिक निष्कर्षों के व्यावहारिक उपयोग, और विशेष रूप से आगे चलकर अपने विचारों के प्रचार और अपने विरोधियों से विचारधारात्मक संघर्ष पर लगायी। परन्तु ख़ुद एंगेल्स ने इस बात की पुष्टि की है कि उनके द्वारा लिखे गये प्रत्येक शब्द और उनके द्वारा अपनायी गयी हर नीति पर वे दोनों पहले आपस में चर्चा करते थे।

उनकी भौतिकवादी द्वन्द्वात्मक पद्धति

उनकी पहली रचना ही जर्मन दर्शनशास्त्र के तत्कालीन सम्प्रदाय से बिल्कुल अलग थी। हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि बर्लिन में अध्ययन के दौरान ही मार्क्स 'यंग हीगेलियन्ज़' के समूह में सम्मिलित हो चुके थे। मार्क्स हीगेलियन दर्शनशास्त्र में पूरी तरह निष्णात हो चुके थे परन्तु उसके दासवत अनुयायी या शिष्य बने बग़ैर। उन्होंने उसमें से वह सब खोज निकाला जिसकी इतिहास के अध्ययन और व्याख्या के लिए क्रान्तिकारी उपयोगिता हो सकती थी। हीगेलियन दर्शन के अनुसार विकास विद्यमान परिस्थितियों के सतत परिवर्तन व विपर्यय, नये अन्तर्विरोधों के अनवरत उदय और वर्तमान अन्तर्विरोधों के पराभव

के माध्यम से होता है। इस दर्शन का नियम है कि नूतन का बीज पुरातन में ही विद्यमान होता है और जैसे–जैसे यह बीज विकसित होता है, प्रारम्भ में दोनों के बीच का अन्तर सिर्फ़ मात्रात्मक होता है; पर जब यह अन्तर एक निश्चित स्तर तक पहुँच जाता है तो दोनों के बीच एक निर्णायक विभाजन होता है और अन्तर गुणात्मक हो जाता है। यह नियम समस्त जैविक और निर्जीव प्रकृति पर लागू होता है, और शायद कुछ उदाहरणों से इसे स्पष्ट करना समीचीन होगा। केमिस्ट्री में हम लोग कार्बन यौगिकों की कई श्रृंखलाओं से परिचित हैं जो एक–दूसरे से मात्र कार्बन और हाइड्रोजन परमाणुओं की संख्या की दृष्टि से भिन्न होती हैं। अगर हम उदाहरण के लिए मार्श गैस को लें तो इसे हम CH_4 से अभिव्यक्त करते हैं। अगर हम इसमें किन्हीं भी परिस्थितियों में कार्बन (C) या हाइड्रोजन (H) जोड़ें तो हमें मात्र मार्श गैस और कार्बन या हाइड्रोजन का मिश्रण मिलता है। और ये तब तक चलता रहेगा जब तक कि हम इसमें कार्बन के एक और हाइड्रोजन के दो परमाणुओं के अनुपात में कोई विशिष्ट मात्रा न जोड़ दें; जब कि इस यौगिक की पूरी प्रकृति ही बदल जाती है और हमें नये गुणधर्मों से युक्त एक *नयी* ही गैस ऐसीटिलीन मिलती है; यह प्रक्रिया इसी प्रकार आगे बढ़ती रहती है। मात्रा गुण में परिवर्तित हो गयी है। अब भौतिकी से एक सरल–सा उदाहरण लेते हैं। पानी को ऊष्मा देने से यह और गरम, और गरम होता जाता है परन्तु एक निश्चित बिन्दु तक अन्तर मात्र ताप के परिमाण का रहता है; गहराई में देखें तो ठण्डा पानी और गरम पानी एक ही द्रव होते हैं, पर जब दी गयी ऊष्मा एक निश्चित स्तर, 100ºF या 212ºF पर पहुँचती है तो पानी एकाएक ही एक नये पदार्थ – भाप – में बदल जाता है, एक ऐसी गैस में जिसके गुणधर्म पानी से नितान्त भिन्न हैं। मात्रा गुण में परिवर्तित हो गयी है। अब एक उदाहरण इतिहास से लेते हैं। जब तक श्रमिक ज़मीन से बँधा था समाज भी भूदास व्यवस्था के स्तर पर था। परन्तु उत्पादन और वाणिज्य के विकास के साथ–साथ ही यह भी उत्तरोत्तर अधिक आवश्यक होता गया कि कुछ क्षेत्रों में श्रमिकों की मुक्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाये और यह तभी सम्भव हो सकता था जब मज़दूरों या भावी मज़दूरों को उन स्थानों की यात्रा करने की स्वतन्त्रता हो जहाँ रोज़गार के अवसर उपलब्ध हों। साथ ही जैसे–जैसे कृषि के पुराने रूप और तरीक़े पुराने या भूस्वामियों के लिए अलाभप्रद होते गये वैसे–वैसे ही उन्होंने अपने भूमिदासों को आवागमन की स्वतन्त्रता देना प्रारम्भ कर दिया या फिर उनके बँधुआ श्रम का

अपने मौद्रिक भुगतानों या लगान के भुगतान के रूप में प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। इस तरह क्रमशः समाज में भूदासत्व के उन्मूलन के लिए परिस्थितियाँ विकसित होती गयीं और जब यह विकास एक निश्चित अवस्था तक पहुँच गया तो भूदासत्व स्वतन्त्र निजी उत्पादन से विस्थापित हो गया। कुछ मामलों में यह परिवर्तन बहुत अधिक हिंसा का परिणाम था जबकि कुछ अन्य मामलों में अपेक्षतया कम हिंसा से ही काम चल गया। कुछ मामलों में परिवर्तन काफ़ी तेज़ी से तो कुछ अन्य मामलों में धीमे–धीमे हुआ। परन्तु सभी मामलों में यह एक क्रान्तिकारी परिवर्तन था – एक नयी सामाजिक व्यवस्था ने पुरानी का स्थान ले लिया क्योंकि नयी परिस्थितियों में परिवर्तन अनिवार्य हो गया था।

स्थानाभाव के कारण हम यहाँ सारे विज्ञानों और जीवन के सारे अनुभवों के उदाहरण नहीं दे सकते। मार्क्स और एंगेल्स ने हीगेल के दर्शन से अध्ययन के इन नियमों और पद्धतियों को अपनाया था। पर जहाँ वे हीगेल की द्वन्द्वात्मक *पद्धति* से दृढ़ता से जुड़े रहे वहीं उन्होंने उसकी भाववादी सैद्धान्तिक अधिरचना को अस्वीकार कर दिया। अन्य सभी भाववादी दार्शनिक सम्प्रदायों की ही तरह हीगेलियन दर्शन भी यह मानकर चलता है कि विचार वास्तविक परिस्थितियों के बिम्ब नहीं होते, अपितु उनकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता होती है, और उनके विकास पर ही अन्य सभी वस्तुओं का विकास आधारित होता है। मार्क्स और एंगेल्स ने इस धारणा को नकार दिया। उन्होंने वास्तविक परिस्थितियों से स्वतन्त्र व असम्बद्ध विचार और विचारधारा की अवधारणा के स्थान पर भौतिकवाद, वस्तुगत विश्व, प्रकृति, और इतिहास को सारे विकास का आधार बताया। 1845 में प्रकाशित अपनी पुस्तक द *होली फ़ैमिली* में उन्होंने इस नये द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को अभिव्यक्ति देने के साथ ही साथ परम्परावादी बुर्जुआ हीगेलियनों द्वारा हीगेल के दर्शन के अनुप्रयोग का खण्डन भी किया। आगे चलकर उन दोनों ने उसी विषय पर एक और पुस्तक भी लिखी जो कि यद्यपि प्रकाशित नहीं हुई, परन्तु फिर भी जो उन्हें अपने विचारों को और भी स्पष्ट करने और अपनी भौतिकवादी अवधारणाओं पर और भी बेहतर पकड़ बनाने में सहायक हुई।

इसी बीच मार्क्स पेरिस में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्ययन और प्रशाई सरकार के विरुद्ध गम्भीर विचारधारात्मक संघर्ष में लगे रहे। प्रशाई सरकार ने इसका बदला मार्क्स को पेरिस से निष्कासित करवाके लिया। मार्क्स तब ब्रसेल्स चले गये, जहाँ वे जब–तब *डायचे ब्रस्सेलेर ज़ाइटुंग* में लिखते रहे।

1846 की मुक्त व्यापार कांग्रेस में उन्होंने मुक्त व्यापार के बारे में एक भाषण दिया जो बाद में एक पैम्फ़लेट के रूप में प्रकाशित हुआ, और 1847 में उन्होंने प्रूधों की पुस्तक *दरिद्रता का दर्शन* के जवाब में फ़्रांसीसी भाषा में *दर्शन की दरिद्रता* लिखी। इस पुस्तक में मार्क्स ने हेगेल के द्वन्द्ववाद को अपने और एंगेल्स के क्रान्तिकारी भौतिकवादी रूप में प्रयुक्त करते हुए सामाजिक विकास नियमों को उजागर करने के साथ ही वैज्ञानिक समाजवाद के मूल तत्वों को भी विकसित किया है।

कम्युनिस्ट लीग

ब्रसेल्स में मार्क्स और एंगेल्स "लीग ऑफ़ द जस्ट" में शामिल हो गये जो अलग-अलग देशों में अलग-अलग नामों से काम करते हुए अन्ततः एक वैध प्रचार संगठन कम्युनिस्ट लीग के रूप में विकसित हो गयी। नवम्बर, 1847 में उन्हें एक सम्पूर्ण, व्यावहारिक और सैद्धान्तिक पार्टी कार्यक्रम तैयार करने का दायित्व सौंपा गया। और यह दायित्व उन्होंने "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" लिखकर निभाया। अपने समय का एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ होने के साथ ही यह घोषणापत्र आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक जनवाद की आधारशिला है। "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" मार्क्स व एंगेल्स के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक काम के निष्कर्षों को क्लासिकीय स्वरूप में प्रस्तुत करता है। बुर्जुआ समाज का ऐसा तीखा विश्लेषण इससे पहले के दौर में सम्भव ही नहीं था। फिर भी भावी समाज की रूपरेखा उकेरने वाली अन्य पद्धतियाँ और कार्यक्रम जहाँ देर-सबेर भुला दिये गये वहीं "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" पूरे विश्व के श्रमजीवियों के लिए प्रकाश-स्तम्भ बना रहा है। मार्क्स और एंगेल्स द्वारा तैयार यह कार्यक्रम अपने प्रकाशन के बाद लगातार और आज 70 वर्ष पश्चात भी (जेल्टा कोट्स की पुस्तक 1918 में प्रकाशित हुई थी – अनुवादक) यदि प्रासंगिक बना हुआ है तो इसका कारण इसके लेखकों की विलक्षण सूक्ष्म दृष्टि और गहरी समझ ही है जिसके चलते वे लोग एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था के अपरिहार्य भावी नतीजों के बारे में इतनी सटीक टिप्पणियाँ कर सके जो अभी अपनी शैशवावस्था में ही थी।

हमारे आन्दोलन के लिए यह कृति इतनी महत्वपूर्ण है और मार्क्स की

शिक्षाओं के सारतत्व को यह इतनी सटीकता से दर्शाती है कि यहाँ थोड़ा रुककर इसका विश्लेषण कर लेना हमारे लिए उपयोगी ही रहेगा।

कम्युनिस्ट घोषणापत्र

ऐतिहासिक भौतिकवाद "कम्युनिस्ट घोषणापत्र" का आधार है। इसका मूल विचार यह है कि किसी भी ऐतिहासिक युग का राजनीतिक और बौद्धिक विकास तत्कालीन आर्थिक उत्पादन और विनिमय की पद्धति और तज्जनित सामाजिक ढाँचे पर आधारित होता है और उसी के द्वारा विश्लेषित और व्याख्यायित किया जा सकता है। भूमि के साझा स्वामित्व पर आधारित आदिम क़बीलाई समाज (जिसका अनुमान मॉर्गन, एंगेल्स व अन्य लोगों ने लगाया है और जो पूरी तरह से इतिहास की भौतिकवादी समझ की पुष्टि करता है) बिखरने के बाद का मानवजाति का पूरा इतिहास सामाजिक विकास के विभिन्न स्तरों पर शोषकों और शोषितों, शासकों और शासितों के बीच वर्ग-संघर्ष का इतिहास रहा है। इन संघर्षों का इतिहास विकासक्रम की एक श्रृंखला के रूप में सामने आता है जिसमें एक स्तर विशेष हासिल किया जा चुका है जबकि दमित और शोषित वर्ग – अर्थात मेहनतकश वर्ग शोषक और शासक वर्ग अर्थात पूँजीपति वर्ग से अपनी मुक्ति सारे समाज की ही सारे शोषण, सभी वर्गीय भेदभावों और वर्ग-संघर्षों से सदा-सर्वदा के लिए मुक्ति के माध्यम से ही हासिल कर सकता है।

घोषणापत्र का पहला भाग बुर्जुआजी (पूँजीपति वर्ग) और सर्वहारा (श्रमिक वर्ग) के बारे में है और संक्षेप में यह बताता है कि किस प्रकार पुरानी सामाजिक व्यवस्थाओं से आधुनिक पूँजीपति वर्ग विकसित हुआ और जिंसों और विनिमय के साधनों के विकास, नये-नये बाज़ारों के खुलने, और नये देशों-प्रदेशों की खोज ने "न केवल वाणिज्य, नौपरिवहन, एवं उद्योग को एक अभूतपूर्व गति प्रदान की अपितु तत्कालीन जर्जर सामन्ती समाज में अन्तर्निहित क्रान्तिकारी तत्वों के लिए भी एक नये तीव्रतर विकास का रास्ता खोल दिया।" पूँजीपति वर्ग के विकास, जिसने कि बहुत क्रान्तिकारी भूमिका अदा की, के हर क़दम के साथ-साथ ही उस वर्ग का तदनुरूप राजनीतिक विकास भी होता रहा। "जहाँ-जहाँ भी पूँजीपति वर्ग का पलड़ा भारी हुआ है, इसने सारे ही सामन्ती, पितृसत्तात्मक, मनोग्राही सम्बन्धों का अन्त कर दिया... संक्षेप में कहें तो, धार्मिक

व राजनीतिक छलावों से ढँके शोषण का स्थान नंगे, निर्लज्ज, प्रत्यक्ष नृशंस शोषण ने ले लिया। पूँजीपति वर्ग ने अब तक के प्रत्येक सम्मानित और श्रृद्धालु विस्मय के पात्र व्यवसाय का प्रभामण्डल नोंच फेंका। इसने चिकित्सक, वकील, पुरोहित, कवि, वैज्ञानिक, सभी को अपने वेतनभोगी चाकरों में बदल दिया।" सारे ही सम्मानित अभिमत हवा में उड़ा दिये जाते हैं और उनके नये स्थानापन्न भी जड़ पकड़ने से पहले ही पुराने पड़ जाते हैं, और इस सबका परिणाम यह हुआ है कि अन्ततः मनुष्य वास्तविकताओं का सामना करने और चीज़ों को अधिक स्पष्टता से देखने के लिए विवश हो गया है।

एक बार अस्तित्व में आने के बाद उत्पादन का पूँजीवादी स्वरूप "सभी राष्ट्रों को, अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए, उत्पादन का यही (पूँजीवादी) ढँग अपनाने को बाध्य करता है; यह उन्हें वह जीवन शैली अपनाने को विवश करता है जिसे यह सभ्यता कहता है, अर्थात, उन्हें भी पूँजीवादी बनने को मजबूर कर देता है। संक्षेप में कहें तो यह अपने जैसी ही एक नयी दुनिया रचता है।" पूँजीवादी व्यवस्था ने विशाल जनसमूहों को बड़े-बड़े शहरों में केन्द्रित कर दिया है। इसने उत्पादन के साधनों को केन्द्रीकृत कर दिया है और सम्पत्ति को कुछ ही लोगों के हाथों में सीमित कर दिया है; और इसी का अपरिहार्य परिणाम राजनीतिक केन्द्रीकरण और ढीले-ढाले सम्बन्धों वाले पुराने प्रान्तों के स्थान पर आधुनिक राष्ट्रों के आविर्भाव के रूप में सामने आया है। इसने गाँवों को शहरों पर निर्भर कर दिया है। इसी प्रकार इसने असभ्य और अर्द्ध-सभ्य देशों को अधिक सभ्य देशों पर, किसानों के देशों को पूँजीपतियों के देशों पर, पूर्व को पश्चिम का मोहताज बना दिया। (यद्यपि, तब से पूर्व भी जागने लगा है और पूर्वी गोलार्द्ध की तमाम जलवायुगत और जातिगत विशिष्टताओं के बावजूद ख़ुद भी तेज़ी के साथ पूँजीवादी होता जा रहा है और अपने विकासक्रम में पुराने पूँजीवादी पश्चिम जैसे ही लक्षण प्रदर्शित कर रहा है।)

"अपने मुश्किल से 100 वर्षों के शासन में ही बुर्जुआजी ने पिछली तमाम पीढ़ियों की अपेक्षा कहीं अधिक विराट, कहीं अधिक महाकाय उत्पादक शक्ति को जन्म दिया है..." परन्तु, जिस प्रकार पूँजीवादी उत्पादन के विकास के लिए जगह बनाने को सामन्तवादी बेड़ियों को टूटकर बिखरना ही था, वैसे ही पूँजीवादी समाज भी तेज़ी से विकसित होते उत्पादन के तरीक़ों और सभी तज्जनित सामाजिक, राजनीतिक, और बौद्धिक सम्बन्धों के साथ असंगत होता जा रहा है।

जिन अस्त्रों से पूँजीवाद ने सामन्तवाद को पराजित किया था, वे ही अब स्वयं इसके विरुद्ध कार्यरत हैं। उत्पादन का विराट विस्तार ही, जो कभी इसकी विजय का वाहक था, अब इसकी मृत्यु का कारण बनेगा। घोषणापत्र वाणिज्यिक संकट की निरन्तर बढ़ती घटनाओं का उदाहरण भी प्रस्तुत करता है जिनके कारण "अति उत्पादन की महामारी" फूट पड़ती है।

पर बुर्जुआजी ने अपने ही विरुद्ध प्रयुक्त होने वाले अस्त्र का निर्माण भर ही नहीं किया है, अपितु इस अस्त्र का प्रयोग करने वाले मनुष्यों अर्थात आधुनिक मेहनतकश वर्ग – सर्वहारा को भी जन्म दिया है। इसके बाद घोषणापत्र सर्वहारा के जन्म, पूँजीपति वर्ग से उसके सम्बन्ध, और आबादी के सभी वर्गों से उसके उद्‌भव की प्रक्रिया पर प्रकाश डालता है। अपने जन्म से ही मज़दूर वर्ग चेतन या अचेतन रूप से पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध संघर्षरत रहता है। परन्तु निरन्तर संघर्षरत तो बुर्जुआजी भी रहती है – पहले सामन्त वर्ग से, फिर बुर्जुआजी के ही उन हिस्सों से जिनके हित उद्योग की उत्तरोत्तर प्रगति में बाधक होते हैं, और विदेशी बुर्जुआजी से संघर्ष तो अनवरत रूप से चलता ही रहता है। इन सभी संघर्षों में पूँजीपति वर्ग अपने ही हितों की रक्षा के लिए मज़दूर वर्ग की मदद माँगने को बाध्य हो जाता है; और यद्यपि मज़दूर वर्ग अनजाने ही अपने सबसे बुरे शत्रु की ओर से लड़ाइयों में हिस्सा लेता है, फिर भी इसी दौर में वह संगठित प्रयासों का महत्त्व भी पहचान जाता है; और राजनीति के अखाड़े में उतार दिया जाता है; और इस तरह पूँजीपति स्वयं ही उसे वह हथियार थमा देते हैं जिससे भविष्य में वह उनका संहार करने वाला है। यद्यपि निम्न मध्यम वर्ग, छोटे उत्पादक, दुकानदार, दस्तकार, व किसान सभी बुर्जुआजी के विरुद्ध संघर्ष में संलग्न रहते हैं पर इनमें से मात्र सर्वहारा ही वास्तविक रूप से क्रान्तिकारी वर्ग होता है। वह आधुनिक उद्योग का अनिवार्य और विशिष्ट उत्पाद होता है और आधुनिक औद्योगिक विकास से मेल खाते सामाजिक सम्बन्धों और राजनीतिक परिस्थितियों का सृजन उसी का ऐतिहासिक प्रारब्ध होता है। जहाँ तक सामाजिक तलछट या जिसे जर्मन में 'लुम्पेन सर्वहारा' कहते हैं का प्रश्न है, सर्वहारा क्रान्ति उसे जब-तब आन्दोलन में खींच तो लेती है परन्तु उसके जीवन की परिस्थितियाँ कुल मिलाकर ऐसी होती हैं कि वह कुछ क्षुद्र प्रलोभनों के लिए प्रतिक्रान्ति का औज़ार बनने को सदैव ही तत्पर रहता है। घोषणापत्र आगे कहता है : "सारे पिछले आन्दोलन अल्पसंख्यकों के या उनके हित में किये गये आन्दोलन थे।

सर्वहारा का आन्दोलन विशाल बहुमत का और उसके हित में छेड़ा गया सचेतन, स्वतन्त्र आन्दोलन होता है (या हो जाना चाहिए)। सर्वहारा, हमारे वर्तमान समाज का निम्नतम तबका, आधिकारिक समाज के ऊपर लदे हुए वर्गों को उखाड़ फेंके बिना न तो आन्दोलित हो सकता है न ही स्वयं को ऊपर उठा सकता है..." अस्तु, आधुनिक औद्योगिक विकास (उपरोक्त व अन्य तरीक़ों से) "बुर्जुआजी के पैरों के नीचे से वह आधार ही खिसका देता है जिस पर यह वर्ग उत्पादन और उत्पादन का अधिग्रहण करता है। फलस्वरूप बुर्जुआ वर्ग अन्ततोगत्वा अपनी क़ब्र खोदने वालों का ही उत्पादन करता है। इसका पतन और सर्वहारा की विजय सामान रूप से अपरिहार्य हैं।"

दूसरे भाग में घोषणापत्र पहले कम्युनिस्टों (अब से सोशलिस्टों) के सर्वहारा से सम्बन्ध की व्याख्या करता है। उनका सर्वहारा के हितों से अलग कोई हित नहीं होता; वे सारे विश्व के मज़दूर वर्गीय आन्दोलन का अगला दस्ता भर हैं। और ये भी कि कम्युनिस्टों द्वारा व्यक्त विचार किसी भावी वैश्विक सुधारक की खोज नहीं हैं। "वे तो ठीक हमारी आँखों के सामने गतिमान एक ऐतिहासिक प्रक्रिया – वर्ग संघर्ष – से उद्भूत सम्बन्धों की सामान्य अभिव्यक्ति मात्र हैं। वर्तमान सम्पत्ति सम्बन्धों का उन्मूलन कम्युनिज़्म का ही विशिष्ट लक्षण नहीं है। ऐतिहासिक परिस्थितियों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप सारे ही साम्पत्तिक सम्बन्ध अतीत में भी लगातार परिवर्तित होते रहे हैं।" कम्युनिज़्म सारी सम्पत्ति के आम उन्मूलन की नहीं अपितु मात्र बुर्जुआ निजी सम्पत्ति के उन्मूलन की बात करता है; और फिर सोशलिज़्म के बारे में उठायी गयी विभिन्न आपत्तियों का उत्तर दिया गया है। घोषणापत्र कहता है – "आप निजी सम्पत्ति के उन्मूलन के हमारे इरादे से भयभीत हैं। पर आपके वर्तमान समाज में नब्बे प्रतिशत लोगों के लिए तो व्यक्तिगत सम्पत्ति का उन्मूलन पहले ही हो चुका है; कुछ गिने-चुने लोगों के लिए इसका अस्तित्व शेष नब्बे प्रतिशत के लिए कैसी भी सम्पत्ति के अनस्तित्व के कारण ही सम्भव है। संक्षेप में, आप हमारी भर्त्सना इसलिए करते हैं कि हम आपकी सम्पत्ति को निर्मूल करने का इरादा रखते हैं। बिल्कुल सही बात है – हम ठीक यही करना चाहते हैं... कम्युनिज़्म किसी भी व्यक्ति को सामाजिक उत्पादन अधिग्रहीत करने से नहीं रोकता – यह तो बस ऐसे अधिग्रहण के माध्यम से उसे दूसरों के श्रम को अपने अधीन करने की क्षमता से वंचित मात्र कर देता है।"

कम्युनिज़्म के विरुद्ध दिये गये दार्शनिक तर्कों के उत्तर में घोषणापत्र कहता है – "इतिहास इसके अतिरिक्त और क्या प्रमाणित करता है कि बौद्धिक उत्पादन का चरित्र भौतिक उत्पादन में हुए परिवर्तन के अनुपात में ही परिवर्तित होता रहता है? शासक वर्गों के विचार ही प्रत्येक युग में विचारों की दुनिया में भी शासन करते रहे हैं। जब लोग समाज में क्रान्तिकारी विचारों की बात करते हैं तो वे मात्र इस तथ्य को अभिव्यक्ति दे रहे होते हैं कि पुराने समाज में ही नये समाज के मूल तत्व जन्म ले चुके हैं और पुराने विचारों का विलोपन अस्तित्व की पुरानी परिस्थितियों के विलोपन के साथ-साथ चलता है।"

पर अक्सर यह कहा गया है; और अब भी दोहराया जाता है कि कुछ सार्वभौमिक सत्य होते हैं जैसे स्वतन्त्रता, न्याय आदि जो सभी परिवर्तनों के बाद भी यथावत बने रहते हैं। ये बिल्कुल सही हैं – मगर क्यों? अतीत का सारा सामाजिक इतिहास वर्गीय अन्तर्विरोधों का इतिहास रहा है, ये अन्तर्विरोध अलग-अलग युगों में अलग-अलग रूपों में व्यक्त होते रहे हैं, परन्तु समाज के एक हिस्से द्वारा समाज के दूसरे हिस्से का शोषण पिछले सभी युगों का सामान्य लक्षण है। फिर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि सामाजिक चेतना और विचार कितने ही भिन्न क्यों न रहे हों, एक तत्व उन सभी युगों में समान रूप से विद्यमान रहा है, और जो सारे वर्गीय अन्तर्विरोधों के उन्मूलन के साथ ही उन्मूलित होगा। कम्युनिस्ट (सोशलिस्ट) क्रान्ति पारम्परिक साम्पत्तिक सम्बन्धों को सर्वाधिक मूलगामी रूप से तहस-नहस कर देती है और इसी कारण इसके विकास के साथ ही पारम्परिक विचारों का भी समूल विनाश अनिवार्य होता है।

तीसरे भाग में मात्र सुधारवादी, प्रतिक्रियावादी, और काल्पनिक समाजवादियों का विषद वर्णन किया गया है।

अन्तिम भाग यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि कम्युनिस्ट मज़दूरों के तात्कालिक उद्देश्यों और हितों की प्राप्ति और पूर्ति के लिए संघर्ष करते हैं पर वे अपने मुख्य उद्देश्य को दृष्टि से ओझल नहीं होने देते – अर्थात श्रमिक वर्ग की पूर्ण मुक्ति, और घोषणापत्र इन ऐतिहासिक शब्दों के साथ पूरा होता है – "कम्युनिस्ट अपने विचारों और उद्देश्यों को छुपाना नापसन्द करते हैं। वे खुलेआम घोषित करते हैं कि उनका उद्देश्य वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को बलपूर्वक उखाड़ फेंकने से ही प्राप्त किया जा सकता है। शासक वर्गों को कम्युनिस्ट क्रान्ति के भय से काँपने दो। सर्वहारा के पास खोने के लिए अपनी ज़ंजीरों के अतिरिक्त

और कुछ भी नहीं है। और उनके जीतने के लिए एक पूरी दुनिया सामने है। दुनिया के मेहनतकशो! एक हो जाओ!"

यह सत्तर वर्ष पहले लिखा गया था (यह जीवनी पहली बार 1918 में प्रकाशित हुई थी – अनुवादक), और कुछ मामूली विवरणों के अतिरिक्त, हर शब्द आज भी – जबकि उद्योग और वाणिज्य 1948 की अपेक्षा कई गुना विराट आकार ग्रहण कर चुके हैं – और भी सत्य लगता है। मज़दूर वर्ग का विकास समान गति से हुआ है परन्तु विपरीत दिशा में। इसका विस्तार और उत्तरोत्तर सचेतन होती एक सुनिश्चित वर्गीय पार्टी के रूप में संगठन, पूँजीपति वर्ग और पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध इसका निरन्तर संघर्ष, भले ही वह अर्द्धचेतन ही रहा हो, अपने सार रूप में मार्क्सवादी ही रहे हैं, भले ही इसके कई नेतागण शब्दों में मार्क्स का खण्डन करते रहे हों। दूसरी ओर इसकी धीमी प्रगति और इस दौरान की गयी भूलों का मूल कारण मार्क्सीय सिद्धान्तों और आन्दोलन व समाज के विकास की अपर्याप्त समझ ही रहे हैं। साथ ही विश्व की सोशलिस्ट पार्टियों के एक हिस्से का इस युद्ध में बौद्धिक रूप से पथभ्रष्ट होकर मज़दूर वर्ग के परम शत्रु पूँजीपति वर्ग का सहगामी बन जाना भी एक कारण रहा है। परन्तु मार्क्स ने ऐसा कभी नहीं कहा कि उनके द्वारा उद्घाटित सामाजिक विकास के नियम निर्विघ्न–निरापद रूप से समाज को उसकी ऐतिहासिक मंजिल तक पहुँचा देंगे। इसके विपरीत, इस यात्रा में अनेक उतार–चढ़ाव आना निश्चित है, और किसी भी समुदाय के दमित वर्गों को शासक वर्गों की विचारधारा, आचारसंहिता, और सोच–समझ के उन तरीक़ों को निर्मूल करने में एक लम्बा समय लगेगा जो पीढ़ियों से उसकी चेतना का हिस्सा बनते आये हैं। यह नियम, धीमे ही सही, पर काम करता है। देर–सवेर वह दिन आना ही है जब श्रमिक वर्ग समाज के गले में लटके पूँजीवाद के इस पत्थर को उतारकर फेंक देगा और इसके साथ ही सारे क्लेश और अपमान, सारे नरसंहार, गन्दी बस्तियों, फ़ैक्ट्रियों और युद्ध के मैदानों में होते मासूमों के हत्याकाण्ड, सदैव के लिए अदृष्ट हो जायेंगे। तभी विज्ञान धन और युद्ध के देवताओं के मन्दिर में देवदासी बनकर नाचने की शर्मनाक स्थिति से मुक्त हो सकेगा और अन्ततोगत्वा प्राकृतिक सौन्दर्य और चमत्कार, विज्ञान के अद्भुत आविष्कार, साहित्य, और कला – सभी सारे मनुष्यों की ऐसी साझा धरोहर बन सकेंगे जिन्हें उनसे कोई छीन नहीं पायेगा।

1848 के विद्रोह

"कम्युनिस्ट घोषणापत्र" के प्रकाशन के कुछ ही हफ़्तों के भीतर, 22 फ़रवरी 1848 को पेरिस में फिर क्रान्ति का बिगुल बज उठा और अन्य स्थानों के साथ-साथ ब्रसेल्स में भी उपद्रव होने लगे। यद्यपि पहले प्रशाई सरकार के कहने पर भी बेल्जियम की सरकार ने मार्क्स को निर्वासित करने से इनकार कर दिया था, इस समय उसने मार्क्स को निकाल दिया। वे पेरिस चले गये, वहाँ कुछ समय आन्दोलन में भागीदारी की, और फिर वापस जर्मनी चले गये जहाँ क्रान्ति उन्हें पुकार रही थी। वे कोलोन पहुँचे और *न्यू राइनिश ज़ाइटुंग* निकालना प्रारम्भ कर दिया।

एंगेल्स, जिनकी अख़बार में भागीदारी बहुत ही सक्रिय थी, कहते हैं – "तत्कालीन लोकतान्त्रिक आन्दोलन में यह अकेला ऐसा अख़बार था जो सर्वहारा के दृष्टिकोण के साथ खडा था।" पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध सशक्त और निर्णायक कार्यवाही का समर्थन करने के बावजूद इसने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रतिक्रियावादी सरकार का पतन क्रान्तिकारी संघर्ष की शुरुआत भर था न कि अन्त – कि इससे सर्वहारा और बुर्जुआजी के बीच वास्तविक वर्ग-संघर्ष का मार्ग प्रशस्त होगा। इसने पेरिस के जुलाई 1848 के विद्रोहियों का खुला समर्थन किया, हालाँकि "इससे इसके लगभग सारे ही शेयरधारक नाराज़ हो गये।"

अनेक प्रयासों के बाद अन्ततः प्रशाई सरकार ने प्रकाशन प्रारम्भ होने के लगभग एक वर्ष पश्चात अख़बार का दमन करने का साहस जुटा ही लिया (19 मई 1848) और मार्क्स को एक बार फिर निर्वासित कर दिया गया। वे जनवादी क्रान्तिकारी केन्द्रीय समिति के निर्देशानुसार पेरिस चले गये; डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा फ़्रांस और जर्मनी में एक विद्रोह की योजना बनायी जा रही थी। परन्तु मुख्यतया उग्र मध्य-वर्ग द्वारा संचालित 13 जून 1849 का यह विद्रोह असफल हो गया। मार्क्स को फ़्रांस छोड़ना पड़ा और वे अपने परिवार के साथ लन्दन चले गये जहाँ उन्होंने अपना शेष जीवन बिताया।

लन्दन में मार्क्स के कार्य

यहाँ, 1852 में कम्युनिस्ट लीग के विघटन के बाद मार्क्स पत्रकारिता और अपने वैज्ञानिक अध्ययन में जुट गये। लन्दन में एक साधनहीन शरणार्थी के रूप

में रहते हुए और अपने परिवार के लिए दाल–रोटी की समस्याओं से लगातार जूझते हुए भी मार्क्स बहुत सारा काम करने में सफल रहे। जीविका के लिए उन्होंने *न्यू योर्क ट्रिब्यून* में जर्मनी की राजनीतिक परिस्थिति के बारे में और आर्थिक विषयों पर लेखों की एक लम्बी श्रृंखला लिखी। यह श्रृंखला तत्कालीन परिस्थितियों का एक विषद अध्ययन है जो तत्कालीन इतिहास के विद्यार्थियों के लिए आज भी महत्वपूर्ण है। आगे चलकर यह श्रृंखला *क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति* शीर्षक से पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हुई। लगभग इसी समय मार्क्स ने 2 दिसम्बर 1851 के सैन्य विद्रोह के बारे में एक अन्य बेहतरीन पुस्तक *लुई बोनापार्ट की 18वीं ब्रुमेर* भी लिखी। रूसी सरकार से लॉर्ड पामर्स्टन के सम्बन्धों पर भी बहुत सटीक टिप्पणी करते लेखों की एक अन्य श्रृंखला भी उन्होंने लिखी। "रूस के बारे में उर्क्वार्ट के लेख" मार्क्स कहते हैं – "मुझे रोचक तो लगे पर मैं उनसे सन्तुष्ट नहीं हुआ। किसी सुनिश्चित निष्कर्ष तक पहुँचने के उद्देश्य से मैंने हैन्सार्ड की संसदीय बहसें और 1807 से 1850 तक की राजनयिक ब्लू बुक्स का अध्ययन किया।" दो पुस्तिकाएँ, पहली इटली की ओर से ऑस्ट्रिया के विरुद्ध मुक्ति युद्ध में फ्रांस और प्रशा के ढोंग का पर्दाफ़ाश करती – *हर वोग्त* – और दूसरी *लॉर्ड पामर्स्टन का जीवन और इतिहास* – मार्क्स की विशिष्ट व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गयी हैं और तत्कालीन इतिहास की प्रामाणिक निधियाँ हैं।

मार्क्स के आर्थिक सिद्धान्त

मार्क्स का मूल्य का सिद्धान्त राजनीतिक अर्थशास्त्र की विवेचना के रूप में पहली बार 1859 में सामने आया। प्रस्तावना में वे अपना सामान्य सिद्धान्त स्पष्ट करते हैं जो आगे चलकर उनके सारे अध्ययन के लिए एक सामान्य सूत्र का काम करता है अर्थात वस्तुगत भौतिक जीवन की उत्पादन पद्धति पर सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं की सामान्य विशिष्टताओं की निर्भरता। और यह सूत्र इस पुस्तक समेत उनके सारे लेखन में विद्यमान है। प्रारम्भ में इस कृति की योजना राजनीतिक अर्थशास्त्र के एक सम्पूर्ण ग्रन्थ के प्रथम खण्ड के रूप में बनायी गयी थी; बाद में यह योजना त्याग दी गयी और विवेचना का सारतत्व संक्षिप्त रूप में पूँजी के प्रथम खण्ड में सामने आया (जो आठ वर्ष

उपरान्त प्रकाशित हुआ)। पूँजी के अन्य दो खण्ड मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स द्वारा सम्पादित किये गये।

इस छोटी सी पुस्तिका में मार्क्स के आर्थिक सिद्धान्तों की गहन विवेचना तो ख़ैर असम्भव ही है। हम इस विषय पर मार्क्स के मूलभूत विचारों की रूपरेखा मात्र ही प्रस्तुत कर सकते हैं। मार्क्स ने पूरे प्रश्न को ठोस ऐतिहासिक नज़रिये से देखा है। वस्तुतः उनका अर्थशास्त्र भी पूँजीवादी व्यवस्था के आर्थिक ढाँचे पर उनके सामान्य दार्शनिक, ऐतिहासिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग ही है। वे श्रम, मूल्य, पूँजी, सम्पत्ति की चर्चा अमूर्त रूप से ऐसे नहीं करते मानो इन सभी का कोई देश–काल निरपेक्ष स्वतन्त्र अस्तित्व हो क्योंकि सामाजिक सम्बन्धों से परे इनका न कोई अस्तित्व है न ही हो सकता है। अपने पूर्ववर्ती बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों के विपरीत उन्होंने प्रचलित आर्थिक व्यवस्था को ही अन्तिम और एकमात्र सहज व्यवस्था मानने से इनकार कर दिया। वे इसे सामाजिक विकास की एक विशिष्ट अवस्था भर मानते थे और इसी दृष्टिकोण से उन्होंने श्रम व पूँजी के सम्बन्धों और उत्पादन पद्धतियों में प्रगति के अपरिहार्य परिणामों को परिभाषित किया है।

पूर्ववर्ती व्यवस्थाओं के विपरीत पूँजीवादी व्यवस्था में मनुष्य की सम्पत्ति उसके द्वारा अधिकृत व्यक्तिगत सुविधा अथवा उपभोग की वस्तुओं में निहित नहीं होती। पूँजीवादी उत्पादन का विशिष्ट लक्षण और चरित्र यही है कि वस्तुएँ उत्पादक अथवा मालिक की निजी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए नहीं अपितु मात्र विनिमय के लिए उत्पादित की जाती हैं। उत्पादित वस्तुएँ सामग्री, व्यापारिक माल, या अर्थशास्त्रीय शब्दावली में पण्य होती हैं। और क्योंकि पूँजीवादी समाज में सम्पत्ति "पण्यों के एक विराट संचय के रूप में सामने आती है; हमारा शोध भी पण्य के विश्लेषण से ही प्रारम्भ होना चाहिए"।

मूल्य का सिद्धान्त

अतः मार्क्स पण्य का गहन विश्लेषण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पूँजीवादी व्यवस्था में उपयोग मूल्य अर्थात उपभोग के लिए इसकी उपयोगिता के अतिरिक्त इसका एक अन्य विशिष्ट लक्षण इसका विनिमय मूल्य होता है। कोई वस्तु तभी तक पण्य रहती है जब तक उसका उपयोग मूल्य स्वयं को प्रकट नहीं करता अर्थात जब तक यह किसी भी रूप या अंश में उपभोक्ता

के उपयोग में नहीं आ जाती। किसी वस्तु का उपयोग मूल्य उसके उपभोक्ता के सन्दर्भ में स्वयं उस वस्तु में ही अन्तर्निहित रहता है जबकि उसका विनिमय मूल्य एक सुनिश्चित आर्थिक सम्बन्ध, अपरिहार्य रूप से एक सामाजिक उत्पाद होता है और अपने सभी विशिष्ट लक्षणों के लिए तत्कालीन उत्पादन पद्धति पर निर्भर होता है। "गेहूँ के स्वाद से कोई यह नहीं बता सकता कि वह किसी रूसी भूदास, फ़्रांसीसी किसान, या अंग्रेज पूँजीपति द्वारा उपजाया गया है।" चाहे जैसे भी उगाया गया हो; इसका उपयोग मूल्य वही रहता है। परन्तु किसी सामाजिक व्यवस्था में इसका विनिमय मूल्य उस समाज में प्रचलित उत्पादन पद्धतियों से निर्धारित होता है।

पूँजीवादी सम्पत्ति विनिमय मूल्यों का समुच्चय होती है और पूँजीवाद को समझने के लिए विनिमय मूल्य की प्रकृति और पण्यों के वितरण की व्याख्या आवश्यक हो जाती है। उदाहरण के लिए किसी भी फ़ैक्ट्री-उत्पाद को ले सकते हैं जो पूँजीवादी समाज में उत्पादन का लाक्षणिक स्वरूप है। इसका उत्पादन फ़ैक्ट्री में मालिक द्वारा मज़दूरी पर रखे गये मज़दूरों की विशाल संख्या द्वारा किया गया। फिर यह थोक व्यापारी, और फिर फुटकर व्यापारी के पास भेजा गया जिसने इसका विक्रय उपभोक्ता को कर दिया। वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग के बीच में बिचौलियों की संख्या कम या अधिक रही हो सकती है, परन्तु उत्पादन और वितरण में उन सभी का योगदान उस वस्तु की आवश्यकता या उसके प्रति लगाव के कारण नहीं अपितु अपने लिए मुनाफ़ा कमाने के उद्देश्य से रहा। उन सभी के हिस्से का यह मुनाफ़ा आया कहाँ से? हम मान लेते हैं कि वे सभी लोग बिल्कुल ईमानदार हैं और उनमें से प्रत्येक ने वास्तु का उचित बाज़ार-भाव पर मूल्य भी चुकाया है। प्रत्येक ने उपभोक्ता द्वारा चुकाये गये क्रय मूल्य या उस वस्तु के विनिमय मूल्य में से अपना हिस्सा प्राप्त किया। उस वस्तु का विनिमय मूल्य पहले तो थोक व्यापारी द्वारा उत्पादक को चुकायी गयी क़ीमत में अभिव्यक्त हुआ। यहाँ यह ध्यान में रखना होगा कि मूल्य क़ीमत का कारण होता है, खुद क़ीमत नहीं होता, और दोनों हमेशा मात्रा की दृष्टि से समानुरूप भी नहीं होते। वस्तुएँ सस्ती या महँगी अर्थात अपने मूल्य से कम या अधिक क़ीमत पर ख़रीदी जा सकती हैं, क्योंकि जहाँ मूल्य उत्पादन की सामाजिक परिस्थितियों से निर्धारित होता है वहीं क़ीमत व्यक्तिगत उद्देश्यों से तय होती है, अर्थात व्यक्ति द्वारा या उसके लिए वस्तु के मूल्य का अनुमान, बाज़ार की

सौदेबाज़ी, माँग और आपूर्ति, आदि–आदि। किसी वस्तु की बाज़ार में क़ीमत उसके लिए चुकायी गयी क़ीमतों का औसत होती है और यह सदैव उस वस्तु के सामाजिक मूल्य से तय होती है।

सभी पण्यों में निहित यह सामाजिक मूल्य होता क्या है? यह होता है मानवीय श्रम । किसी भी वस्तु का विनिमय मूल्य उसमें निहित मानवीय श्रम – शारीरिक हो या मानसिक – जितना ही होता है। और इसका अर्थ कैसी भी परिस्थितियों में किया गया श्रम नहीं है। वस्तु का मूल्य उसमें निहित सामाजिक रूप से *आवश्यक* श्रम होता है अर्थात तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में उसके उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम की औसत मात्रा। यदि कोई इससे कम अथवा अधिक श्रम का उपयोग करे तो भी वस्तु का विनिमय मूल्य अपरिवर्तित रहता है क्योंकि वह तो *सामाजिक रूप से आवश्यक* श्रम से ही तय होता है। और ये भी कि यदि विद्यमान सामाजिक परिस्थितियों में वितरण योग्य परिमाण से अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है तो उन वस्तुओं के विनिमय मूल्य में गिरावट आ जायेगी। यदि उत्पादन के उपकरणों में सुधार होता है तो संक्रमण के प्रारम्भिक दौर में, जबकि उत्पादन के पुराने तरीक़े ही आम तौर पर स्वीकार्य हैं, किसी वस्तु का मूल्य पुरानी उत्पादन पद्धति के अनुसार सामाजिक रूप से आवश्यक मानवीय श्रम के परिमाण से निर्धारित होता है, पर नयी उत्पादन पद्धति के उत्तरोत्तर प्रचलन में आने के साथ–साथ मूल्य का निर्धारण भी नयी व्यवस्था के अनुरूप होने लगता है।

और यह नियम सभी पण्यों पर लागू होता है जिनमें वह विशिष्ट पण्य – मानवीय श्रम – भी सम्मिलित है जो व्यक्ति के स्वामित्व में और उससे अवियोज्य होते हुए भी पूँजीवादी उत्पादन पद्धति में, पिछली सभी व्यवस्थाओं के विपरीत, अन्य किसी भी पण्य की ही भाँति बेचा और ख़रीदा जाता है। अन्य पण्यों की तरह ही, पूँजीपति द्वारा ख़रीदे जाने पर, श्रमिक की श्रम–शक्ति के मूल्य का भुगतान भी उसके पुनरुत्पादन के लिए सामाजिक रूप से आवश्यक मानवीय श्रम से होता है। अर्थात पूँजीपति को मज़दूरी के रूप में उतनी धनराशि का भुगतान करना होगा जितनी मज़दूर के अपने भरण–पोषण और अपनी वंश–वृद्धि के लिए जीवन की तत्कालीन परिस्थितियों में आवश्यक है। जीवन–स्तर, श्रम की आपूर्ति और माँग, और अपने साझा हितों के लिए मज़दूरों की एकजुटता के स्तर आदि कारकों के अनुसार यह धनराशि भी अलग–अलग हो सकती है। पर जब तक

समाज का मात्र एक ही हिस्सा उत्पादन से जुड़ा है और दूसरा हिस्सा उस श्रम के उत्पादों पर जीता है तब तक श्रमिक के भरण–पोषण के लिए दी जाने वाली मज़दूरी उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के मूल्य से कम ही रहेगी। यही सार–तत्व है उत्पादन की पूँजीवादी व्यवस्था का। मज़दूर द्वारा अपनी मज़दूरी के समतुल्य मूल्य के उत्पादन में लगाया जाने वाला श्रम "आवश्यक" श्रम होता है, उसका उत्पाद "आवश्यक" उत्पाद, और उस उत्पाद का मूल्य "आवश्यक" मूल्य। मज़दूरी के मूल्य के पुनरुत्पादन के लिए आवश्यक श्रम के अतिरिक्त लगाया जाने वाला श्रम "अतिरिक्त" श्रम, इस श्रम का उत्पाद "अतिरिक्त" उत्पाद और उसका मूल्य "अतिरिक्त" मूल्य होता है। यहाँ आवश्यक से तात्पर्य उस परिमाण से है जितना तत्कालीन परिस्थितियों में जीवन यापन के लिए आवश्यक हो।

यहाँ एक–दो बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। अपनी पूँजी में वृद्धि और संयन्त्र और मशीनों में सुधार करके पूँजीपति अपना मुनाफ़ा बढ़ा लेता है (यद्यपि ध्यान रहे कि मुनाफ़े की दर नहीं बढ़ती पर इस विषय पर चर्चा अभी नहीं)। इससे ऊपरी तौर पर यह लग सकता है मशीन ने उसका अतिरिक्त मूल्य कुछ सीमा तक बढ़ा दिया। परन्तु पूँजीपति को बिक्री के लिए उत्पादित की जाने वाली मशीन भी किसी भी अन्य वस्तु की ही तरह एक पण्य ही होती है और इसमें निहित मूल्य भी इसके उत्पादन के लिए आवश्यक सामाजिक श्रम के बराबर ही होता है। और यही बात किसी भी वस्तु, उदाहरण के लिए कपड़े के उत्पादन से सम्बन्धित संयन्त्र, कच्चे माल, और अन्य सहायक सामग्री पर लागू होती है। कुछ वर्ष बीतने के साथ–साथ कच्चे माल, मशीनों आदि का यह मूल्य तैयार उत्पाद – कपड़े में हस्तान्तरित हो जाता है। तैयार कपड़े में कपास व अन्य सहायक सामग्री का मूल्य नहीं बदलता; मशीन व संयन्त्र का भी मूल्य नहीं बदलता सिवाय इसके कि उसका एक अंश हस्तान्तरित हो जाता है जिसे "टूट–फूट या घिसाई" के नाम पर बट्टे खाते में डाल दिया जाता है।

यदि मुनाफ़ा अतिरिक्त श्रम द्वारा उत्पादित अतिरिक्त मूल्य का परिणाम है तो फिर मशीनों में सुधार के साथ–साथ मुनाफ़ा भी कैसे बढ़ जाता है? सीधा सा जवाब है – क्योंकि मशीन समय बचाने का यन्त्र है। वह मज़दूर को अपनी मज़दूरी के समतुल्य मूल्य का उत्पादन दिन के और भी कम घण्टों में करने में समर्थ कर देता है और इस प्रकार दिन के और भी अधिक घण्टे अतिरिक्त मूल्य का उत्पादन करने के लिए बच जाते हैं। यदि पहले मज़दूर को दिन के बारह

में से छह घण्टे अपनी मज़दूरी के समतुल्य मूल्य के उत्पादन में लगाने होते थे तो परिष्कृत मशीन से वह यही काम तीन घण्टों में कर लेता है और इस प्रकार पूँजीपति को अपना नौ घण्टों का श्रम निःशुल्क भेंट कर देता है। यही कारण है कि उत्पादन प्रणाली में हर प्रगति शोषण की दर को बढ़ाता है और मज़दूरों और पूँजीपतियों के वर्गीय वैर को और भी तीखा कर देता है। ऐसा ही परिणाम अर्थात शोषण की दर में वृद्धि काम के घण्टे बढ़ाकर प्राप्त किया जाता है (यद्यपि उसी सीमा तक जहाँ तक वह मज़दूर की क्षमता पर कोई दुष्प्रभाव न डाले)। शोषण का सीधा, खुला प्रयास होने के कारण इसका प्रतिरोध होता है और पूँजीपतियों और मज़दूरों के बीच कार्य–दिवस को लेकर संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है।

यही परिणाम मज़दूरों का जीवन स्तर गिराकर या जीविका की लागत कम करके भी हासिल किया जाता है; और इससे एक ओर तो महिलाओं और बच्चों को काम पर रख लिया जाता है जिनका जीवन स्तर आमतौर पर पुरुषों की अपेक्षा नीचा होता है (और जो अभी तक पुरुषों की अपेक्षा उत्पादन के अधिक विनीत और निरीह उपकरण होते हैं), और दूसरी ओर मुक्त व्यापार की स्थापना करके (क्योंकि अभी तक इंग्लैण्ड के समक्ष अन्य देशों की प्रतिस्पर्द्धा से भयभीत होने का कोई कारण उपस्थित नहीं है), मज़दूरों के भोजन की लागत कम करके। यह संयोग मात्र नहीं है कि जो औद्योगिक पूँजीपति भोजन की लागत घटाने के अपने स्वघोषित लक्ष्य के लिए मुक्त व्यापार की स्थापना के लिए मुख्यतया ज़िम्मेदार थे, वे ही परोपकारी कार्य–दिवस को छोटा करने और नितान्त अमानवीय दशाओं में भी महिलाओं और बच्चों से काम लेने पर अंकुश लगाने के कट्टर विरोधी थे।

और पुरुषों, महिलाओं, और बच्चों के अतिरिक्त श्रम से पैदा हुआ यह अतिरिक्त मूल्य, जिसके लिए पूँजीपति ने कोई क़ीमत नहीं चुकायी है, ही उसकी सम्पत्ति और धन–दौलत का स्त्रोत है। एक समय था जब दासों और भूदासों के स्वामी अपनी इस चल सम्पत्ति के उत्पादन को सीधे–सीधे अधिग्रहीत कर लेते थे और उनके भोजन–वस्त्र आदि का वैसे ही ध्यान रखते थे जैसे अपने मवेशियों के भोजन–वस्त्र आदि का। पर अब मनुष्य बाहरी तौर पर स्वतन्त्र हैं और अनुत्पादक वर्गों की सम्पत्ति एक रहस्य बनी है। पर रहस्य मात्र यह है – पूँजीपति द्वारा मज़दूर के अतिरिक्त श्रम या उत्पादित अतिरिक्त मूल्य का

अधिग्रहण। एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के स्वत्वहरण का यह एक विशिष्ट स्वरूप है और इसी स्वरूप पर पूँजीपति और मज़दूर का वर्गीय सम्बन्ध जो कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति का सारतत्व है।

पूँजीवादी न्यायशास्त्र का पूरा ढाँचा, सम्पत्ति के पूँजीवादी क़ानून, पूँजीवादी आचारसंहिता, एक शब्द में कहें तो पूरी पूँजीवादी विचारधारा पर आधारित होता है। और कितने ही सुधार क्यों न कर दिये जायें जब तक उत्पादन की पूँजीवादी पद्धति रहेगी, मज़दूरों का शोषण जारी रहेगा और पूँजीवादी आचार-विचार ही समाज के सामान्यतया स्वीकृत आचार-विचार रहेंगे। देश की विशाल बहुसंख्या – मज़दूरों की शारीरिक और मानसिक मुक्ति तो तभी सम्भव होगी जब "हस्तगतकर्ताओं का ही हस्तगतीकरण" कर लिया जायेगा और मुनाफ़े के लिए उत्पादन का स्थान उपयोग के लिए उत्पादन ले लेगा।

इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा

हम इस विषय पर यहाँ और अधिक विस्तार में नहीं जा सकते परन्तु मार्क्स की सैद्धान्तिक विवेचना का समाहार करने से पूर्व इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा के बारे में कुछ कहना चाहेंगे। अब तक प्रवर्तित सारे सिद्धान्तों में सर्वाधिक अनर्थ इसी सिद्धान्त का किया गया है जबकि यही सिद्धान्त मार्क्स की शिक्षाओं का सारतत्व है।

निस्सन्देह इस अवधारणा से हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि किसी भी युग में व्यक्ति के क्रियाकलाप उसके निजी भौतिक लाभ मात्र से संचालित होते हैं। इसके विपरीत एक भौतिकवादी ही सबसे पहले व्यक्तियों के उत्साह, आदर्शों, और आकांक्षाओं को पहचानता है। मार्क्स की भौतिकवादी ऐतिहासिक अवधारणा को स्वीकार करने वाले दार्शनिक भौतिकवादी ही अपने आदर्शों के लिए अपने भौतिक सुखों को त्यागने को प्रस्तुत रहते हैं और उन्होंने ऐसा त्याग किया भी है जिसका एक उदाहरण रूस के मार्क्सवादी समाजवादी हैं जो अपने जीवन के प्रियतम उद्देश्य सामाजिक क्रान्ति के लिए अपने जीवन सहित अपना सर्वस्व निछावर कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं। एक भौतिकवादी की विशिष्टता यह नहीं है कि उसके कोई आदर्श नहीं होते या फिर वह दूसरों के आदर्शों को मान्यता नहीं देता अपितु यह है कि वह और भी गहराई में जाकर इन आदर्शों

और इस उत्साह के स्रोत की जाँच करता है – कि ये विशिष्ट आदर्श, आचार–व्यवहार, और विचार इस विशिष्ट युग में ही क्यों उपजे।

उदाहरण के लिए ऐसा क्यों है कि जहाँ एक ओर हम नरभक्षण, दासता, और भूदासत्व के विचार तक से काँप जाते हैं वहीं दासता के वर्तमान दबे–ढँके स्वरूपों पर हमें कोई आपत्ति नहीं होती? जब समाज की उत्पादक शक्तियाँ बहुत ही छोटे और आदिम स्तर पर थीं तो किसी युद्धबन्दी या अपनी सीमा में पकड़े गये किसी घुसपैठिये की उसके विजेताओं के लिए भोजन बनने के अतिरिक्त और कोई उपयोगिता नहीं हो सकती थी – उसे जीवित रखना समाज के लिए एक बोझ ही होता, और एक अकिंचन समाज के लिए तो एक असहनीय बोझ। एक नरभक्षी अपने आप से इस तरह के तर्क नहीं करता रहा होगा, अपितु अनजाने में ही तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य में वह स्वयं, उसके विचारों, उसकी नैतिक भावनाओं, उसके सम्पूर्ण मनोजगत के लिए अपने जैसे ही किसी मनुष्य को खा जाना एक स्वाभाविक, नैतिक, कृत्य रहा होगा। कुछ–कुछ ऐसा ही उन पिछड़े समाजों में स्त्री या अत्यन्त दुर्बल शिशुओं की हत्या के बारे में कहा जा सकता है जो अन्यथा अपने बच्चों के प्रति बहुत अधिक दया ममता रखते थे। परन्तु उत्पादक शक्तियों के विकास और जीवन निर्वाह के साधनों में वृद्धि के परिणाम स्वरूप अतिरिक्त मनुष्य बोझ न रहकर एक वरदान बन गये। एक नया आदर्श– मानव जीवन की पवित्रता और नरभक्षण की वीभत्सता का आदर्श पहले अस्पष्ट रूप से और फिर अधिक सशक्त रूप से प्रकट हुआ जिसने पुराने आदर्श का स्थान ले लिया। परन्तु इस आदर्श के प्रकटीकरण के मूल में क्या था? नैतिक दृष्टिकोण में इस प्रायः अचेतन परिवर्तन का कारण क्या था? सीधा सा उत्तर है – उत्पादक शक्तियों का विकास या उत्तरकालीन सामाजिक व्यवस्थाओं में उत्पादन पद्धतियों में परिवर्तन। हम अब अपने दुर्बल शिशुओं को मारते नहीं हैं अपितु उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाने पर ध्यान दिये बिना ही उस कच्ची उम्र में ही कारख़ाने और वर्कशॉप के दमघोंटू माहौल में सांस लेने भेज देते हैं जिस उम्र में उन्हें स्कूल या फिर खुली हवा में होना चाहिए। हम उबाऊ श्रम से उनके शरीर, मन और आत्मा को कुचल देते हैं। दयालु, ईमानदार और कोमल हृदय होते हुए भी हम मानवजाति के बहुमत को उन सब चीजों से वंचित कर देते हैं जो जीवन को जीने योग्य बनाती हैं – हमारी नैतिकता, हमारा धर्म इसकी अनुमति देते हैं। क्यों? क्योंकि हमारी उत्पादन पद्धति के लिए सस्ते

श्रम की भरपूर आपूर्ति आवश्यक है, व्यक्तिगत रूप से श्रमिक पर चाहे जो भी बीते। हम निजी सम्पत्ति और चोरी के बारे में क़ानूनों का निर्माण और पालन करते हैं : हम कुछ निश्चित आचार संहिताओं का पालन करते हैं, और इन क़ानूनों और नैतिक मूल्यों को अपरिवर्तनीय मानते हैं, और फिर भी हम एक अल्पसंख्यक वर्ग द्वारा बहुसंख्यक वर्ग के श्रम के उत्पादन को हथिया लिये जाने की अनुमति देते हैं और इसे एक वैध, ईमानदार, और न्यायसंगत कार्य मानते हैं। क्यों? क्योंकि जैसा कि मार्क्स ने स्पष्ट किया है, हमारे अनजाने में ही शासक वर्गों के आचार और क़ानून पूरे समाज पर ही अधिरोपित हो जाते हैं और उसी माहौल में पलने–बढ़ने के कारण हम उन्हें सहज–स्वाभाविक मान लेते हैं जबकि वास्तव में वे आर्थिक औद्योगिक परिस्थितियों के एक विशिष्ट स्वरूप से ही उपजते हैं।

पर हममें से कई लोग इस व्यवस्था से विद्रोह कर देते हैं; हमारा कहना है की हम कुछ सिद्धान्तों को मात्र इसलिए नैतिक नहीं मान सकते क्योंकि वे परम्पराओं द्वारा पवित्र ठहरा दिये गये हैं या फिर वे शासक वर्ग के लिए सुविधाजनक हैं। हम एक ऐसी नयी सामाजिक व्यवस्था के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर हैं जिसमें वर्तमान व्यवस्था के भयावह पक्ष सदा–सर्वदा के लिए दफ़न कर दिये जायेंगे। ऐसे विचार और आदर्श कैसे हमारे मन में स्थान बना लेते हैं और वो क्या है जो उन्हें समाजवाद की माँग उठाने वाला वर्तमान स्वरूप प्रदान करता है। क्योंकि पूँजीवाद का समय तेज़ी के साथ बीत रहा है। क्योंकि जैसे कि मार्क्स ने स्पष्ट किया और जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं कि समाज का वर्तमान पूँजीवादी स्वरूप औद्योगिक क्षेत्र में हुई वृहत्काय प्रगति के साथ तालमेल बिठा पाने में उत्तरोत्तर अक्षम होता जा रहा है। साथ ही, पूँजीवादी समाज से उद्भूत जीवन का सम्पूर्ण ढाँचा, शहरों में लोगों के विशाल समूहों का एकत्रीकरण, कारख़ानों में मज़दूरों की विशाल संख्या का एक–दूसरे के सम्पर्क में आना, उत्पादन के उत्तरोत्तर अधिक केन्द्रीकृत और सामूहिक स्वरूपों से हुई औद्योगिक प्रगति, सम्पत्तिविहीन वर्गों की अवर्णनीय निर्धनता और यातना की तुलना में सम्पत्तिशाली वर्गों की अभूतपूर्व सम्पत्ति और वैभव – ये सभी और इनके अतिरिक्त और भी अनेक बातों ने, जिनकी चर्चा करने का यहाँ समय नहीं है, हमें नये आदर्श, नयी आशाएँ, और नया उत्साह प्रदान किया है। पुरातन के बीच से ही नवीन के बीज प्रस्फुटित होने लगे हैं और धीरे–धीरे नये

आदर्श पुरानों का स्थान लेते जा रहे हैं। जब हम कहते हैं कि पूँजीवाद का बिखराव और समाजवाद की स्थापना अपरिहार्य है तो इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि यदि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें तब भी समाजवाद का फल हमारी गोद में आ गिरेगा। नहीं, अपरिहार्य यह है कि हम हाथ पर हाथ रखकर बिना कुछ किये बैठे नहीं रहेंगे। अपरिहार्य यह है कि हर पूँजीवादी देश की जनसंख्या के लगातार बढ़ते हिस्से विद्रोह के लिए उठ खड़े हों और उस व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप को समझने लगें जिसमें हम रहते हैं। अपरिहार्य यह है कि उत्पादन के क्षेत्र में नित्यप्रति उभरता सामूहिकीकरण उत्पादन में लगे मज़दूरों के संगठन में परिणित हो जाये, पहले तो अपेक्षतया छोटे आर्थिक लाभों के लिए, और उत्तरोत्तर अग्रसर राजनीतिक उद्देश्यों के लिए, उत्पादन प्रक्रिया का दास बने रहने के स्थान पर उस प्रक्रिया का स्वामी बनाने के उद्देश्य के लिए। संक्षेप में यह समाजवाद के लिए आर्थिक परिस्थितियों के परिपक्व होने के साथ-साथ ही मज़दूरों की पूँजीवादी मानसिकता का भी समाजवादी मानसिकता में परिवर्तित होना अपरिहार्य है। इस परिवर्तन की आवश्यकता और अनिवार्यता को हम जितना अधिक समझेंगे, जितने उत्साह से हम उन आदर्शों के लिए काम करेंगे जिन्हें हम समाज के ऐतिहासिक विकास के अनुकूल समझते हैं, उतनी ही शीघ्रता से यह परिवर्तन होगा।

अतः एक भौतिकवादी और कुछ भी हो, भाग्यवादी नहीं होता। वह मात्र तार्किक और व्यावहारिक होता है। मात्र सहानुभूति से प्रेरित मनमोहक योजनाएँ बनाने के स्थान पर (उदाहरण के लिए जैसा कि आदर्शवादी समाजवादी करते थे) जिनको व्यवहार में लाना सम्भव हो भी सकता है और नहीं भी, वह जानता है कि किस दिशा में कार्य करने से प्रयास फलीभूत होंगे और उसी दिशा में अपने प्रयास केन्द्रित करता है। साथ ही अपने तरीक़ों का चुनाव करने में भी वह आर्थिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का जायज़ा लेता है। यहाँ वह पाता है कि पूँजीपति द्वारा कोई भी समतुल्य भुगतान किये बिना मज़दूरों द्वारा उत्पादित अतिरिक्त मूल्य का अधिग्रहण ही हमारे पूँजीवादी समाज को इसका विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है। इसी का परिणाम है कि पूँजीपतियों और मज़दूरों के बीच में एक मूलभूत अन्तर्विरोध होता है। पूँजी की दासता से मुक्ति में सबसे गहरी दिलचस्पी मज़दूर वर्ग की होती है। और यही कारण है कि एक वैज्ञानिक समाजवादी की अपील मुख्यतया मज़दूरों को ही सम्बोधित होती है। और फिर

आज की परिस्थितियों के अध्ययन से भी यह बात समझ में आती है कि समाजवाद मज़दूर वर्ग को ही सबसे अधिक आकर्षित करेगा। एक फ़ैक्ट्री मज़दूर, अपने छोटे से भूमि के टुकड़े पर खेती करने वाले एक किसान, एक छोटे व्यापारी या दुकानदार की मानसिकता पर उनकी जीवन दशाओं के प्रभाव की तुलना करके देखिये। किसान अलग–थलग जीवन बिताता है। अपने जैसे अन्य लोगों से उसका संवाद बहुत सीमित होता है; उसकी सोच भी संकीर्ण होती है; उसे बाहर की विशाल दुनिया के बारे में न तो जानकारी होती है न परवाह। वह प्राकृतिक शक्तियों का दास होता है, उन पर निर्भर होता है उन्हीं के भय के साये में जीता है; और इस प्रकार अलौकिक शक्तियों में विश्वास करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति होता है। उसकी जीविका भूमि की छोटे से निजी टुकड़े पर उसके अपने श्रम द्वारा चलती है; अपने जैसे अन्य किसानों के साथ एकजुट होने की बात उसके मन में बहुत मुश्किल से ही आ सकती है। समष्टिवाद, साझा मिल्कियत की बात से ही उसके मन में अपना सर्वस्व, अपना वह छोटा सा भूमि का टुकड़ा छिन जाने का भय पैदा हो जाता है जिस पर उसका पूरा जीवन निर्भर है। यह स्वाभाविक ही है कि वह अपना सर्वस्व किसी ऐसी वस्तु के लिए दाँव पर नहीं लगाएगा जो उसके विचार से एक दिवास्वप्न मात्र है। स्पष्ट है कि समाजवादी विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए वह कोई उपयुक्त पात्र नहीं हो सकता। (हाँ! उन बड़े–बड़े फ़ार्मों पर मज़दूरी पर रखे गये किसानों की बात अलग है जहाँ भूमि पर पूँजीवादी पद्धति से काम करवाया जा रहा है।)

अब बात करते हैं छोटे दुकानदार की। किसान की अपेक्षा उसके जीवन का सामाजिक दायरा कुछ अधिक व्यापक होने के कारण यद्यपि उसकी सोच भी कुछ अधिक विस्तृत होती है परन्तु फिर भी समाजवादियों की दृष्टि से वह भी उपयुक्त पात्र नहीं है। उसकी छोटी सी निजी सम्पत्ति उसे वर्तमान व्यवस्था में अपना भी एक हिस्सा होने की अनुभूति कराती है। वह हर दिन इसी भय में जीता है कि कहीं उसे भी मज़दूरों की क़तारों में न धकेल दिया जाये; पर वहीं उसे यह आशा भी बनी रहती है कि अपनी सम्पत्ति बढ़ाकर वह समाज के उच्चतर वर्गों में सम्मिलित हो सकेगा। यह सही है कि वह बड़े पूँजीपति से घृणा करता है परन्तु उसकी भावनाओं में अविश्वास कम और ईर्ष्या अधिक होती है। वह बड़े पूँजीपति के विरुद्ध भी खड़ा हो सकता है परन्तु मात्र एक प्रतिक्रियावादी उद्देश्य से – अर्थात आगे सामाजिक विकास को अवरुद्ध करने के लिए, और इसमें भी

वह बहुत आगे तक नहीं जाता कि कहीं कठोर हाथों वाले मज़दूर अपने गन्दे हाथ उसकी सम्पत्ति पर न डाल दें। यही कारण है कि एक वर्ग के रूप में निम्न मध्यम वर्ग सदैव ही मज़दूर वर्ग का अविश्वसनीय साथी ही साबित हुआ है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इस वर्ग या इससे उच्चतर वर्गों के व्यक्ति मज़दूरों की मुक्ति के संघर्ष में सम्मिलित हो ही नहीं सकते, और अपने बेहतर अवसरों और ज्ञान के द्वारा आन्दोलन की बड़ी सेवा कर ही नहीं सकते; शर्त बस यह है कि बौद्धिक रूप से वे स्वयं को अपनी वर्गीय सीमाओं से मुक्त कर चुके हों, अर्थात वर्ग चेतन मज़दूरों के आदर्शों को पूरी तरह अपना चुके हों।

और अब अन्त में फ़ैक्ट्री मज़दूर की बात करते हैं। उसके पास कोई निजी सम्पत्ति नहीं होती, और इसी कारण निजी सम्पत्ति के प्रति उसका मोह भी अपेक्षतया कम होता है। हाँ यह सच है कि निजी सम्पत्ति में उसकी आस्था होती है और वह उसके प्रति विस्मय और भय का भाव रखता है और अपने लिए भी उसका कुछ हिस्सा पाने की लालसा उसमें होती है, आदि, आदि परन्तु निजी सम्पत्ति के प्रति उसका लगाव व्यक्तिगत नहीं होता। एक निजी सम्पत्ति विहीन समाज का विचार उसे इतना भयभीत नहीं करता जितना औरों को। उसके पास खोने के लिए कोई निजी सम्पत्ति नहीं होती, अतः वह समाज के एक ऐसे स्वरूप की सम्भावना को स्वीकार करने के लिए भी औरों की अपेक्षा अधिक तत्पर रहता है जिसमें किसी के पास कोई निजी सम्पत्ति नहीं होगी। वह अपने सहकर्मियों के साथ लगातार सम्पर्क में रहता है; उसकी सोच भी अधिक विकसित होती है। वह वस्तुओं की उत्पादन प्रक्रिया में अपने सहकर्मियों के साथ जुड़ा होता है और वस्तुओं के सामूहिक उत्पादन का विचार उसके लिए सहज–स्वाभाविक होता है; जिसका अगला ही क़दम होता है इन वस्तुओं के सामूहिक स्वामित्व का विचार। उसके मालिक अपने साझे हित के लिए संगठित होते हैं – तो मज़दूर अपने साझा हितों के लिए संगठित क्यों न हों – और वे संगठित हो जाते हैं। कारख़ाने और शहर में प्रतिदिन उसका सामना अद्भुत मानवीय उपलब्धियों से होता है, और वह देखता है कि कैसे मनुष्यों ने प्रकृति की शक्तियों पर विजय प्राप्त की है। परिणामस्वरूप उसके मन से अलौकिक शक्तियों का भय भी किसी सीमा तक कम हो जाता है और वह अपने प्रयासों पर भरोसा करना सीखता है। इस तरह, काम के दौरान पड़ने वाले अन्य सभी प्रभावों के साथ ही, शिक्षा के प्रसार, आदि कारणों से समाजवादी उद्देश्यों और

आदर्शों का जब मज़दूर वर्ग के मध्य प्रचार किया जाता है तो उनके बीज बहुत ही उपजाऊ धरती पर पड़ते हैं। और यही कारण है कि वैज्ञानिक समाजवादी यह कहते हैं कि औद्योगिक मज़दूरों के समूहों द्वारा देर–सबेर समाजवाद को अपनाया जाना अपरिहार्य है, और मज़दूरों के बीच अपना प्रचार करते हुए वे इस परिवर्तन की गति को जितना सम्भव हो उतनी तीव्र करने का प्रयास करते हैं।

यदि इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा के इस संक्षिप्त विवेचन से हम इन कुछ भ्रान्तियों के निराकरण और इस विषय में और अधिक अध्ययन–मनन के लिए प्रेरित करने में सफल हुए तो कहा जा सकता है हमारा समय व्यर्थ नष्ट नहीं हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ

अपने सैद्धान्तिक अध्ययनों के अतिरिक्त मार्क्स ने अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन के व्यावहारिक कार्यों में भी हिस्सा लिया। 1864 में जब सेण्ट जेम्स हॉल में हुई एक बैठक में अन्तर्राष्ट्रीय कामगार संघ की स्थापना हुई तो इसका बौद्धिक नेतृत्व मार्क्स के हाथों में था। यह संगठन सभी देशों के मज़दूर वर्गों को संगठित करने के लिए बना था और इसने इस दिशा में बहुत काम किया। यद्यपि पेरिस कम्यून के विद्रोह के लिए यह सीधे–सीधे उत्तरदायी नहीं कहा जा सकता परन्तु इसने पेरिस कम्यून के योद्धाओं के साथ अपनी पूर्ण एकजुटता घोषित की और जब तक कम्यून चल पाया तब तक उसके दिशा–निर्देश का कार्य इसी संगठन के पेरिसवासी सदस्यों द्वारा किया जाता रहा। जहाँ तक कम्यून से ठीक पहले के 1870–1871 के युद्ध का प्रश्न है मार्क्स ने जर्मन सामाजिक जनवादियों के रुख़ का पूरी तरह अनुमोदन किया और पार्टी के ब्रुन्सविक सम्मलेन को लिखे पत्र में उन्होंने अधिग्रहण की नीति के अपरिहार्य परिणामों की सटीक भविष्यवाणी भी की।

1871 के कम्यून का, जिसके बारे में मार्क्स की एक रोचक रचना फ्ऱांस में गृह युद्ध लिखी गयी है, का पतन हो गया, और "इण्टरनेशनल" जो कि लम्बे समय से शासक वर्गों के भय और घृणा का पात्र बना हुआ था सभी देशों में प्रतिबन्धित कर दिया गया। इसके साथ ही इसकी व्यावहारिक कार्यवाही के क्षेत्र का बड़ा हिस्सा भी कट गया। यही नहीं, मज़दूर वर्गों का संगठन; ख़ासकर जर्मनी

में, उस मंज़िल तक पहुँच गया था जहाँ सदस्यों को अपनी ऊर्जा का मुख्य भाग अपने–अपने राष्ट्रीय संगठनों को सुदृढ़ और विकसित करने में लगाना पड़ रहा था। और अन्तिम बात यह कि मुख्यतया अपनी अवधि पूरी कर चुकने के कारण "इण्टरनेशनल" में समय–समय पर कमोबेश गम्भीर क़िस्म के मतभेद उभरने लगे थे। इसी बीच, महासचिव होने के कारण मार्क्स पर काम का बोझ बहुत बढ़ गया था और वे अपनी मुख्य कृति पूँजी को पूरा करने में अधिक समय देना चाहते थे। उन्होंने स्वयं को महासचिव पद से अलग कर लिया और उनके सुझाव पर 1873 में "इण्टरनेशनल" का मुख्यालय न्यूयॉर्क ले जाया गया। इसके साथ ही एक संगठन के रूप में "इण्टरनेशनल" का अस्तित्व कुछ समय के लिए समाप्त हो गया। पर मार्क्स हर देश में पार्टी के काम में सक्रिय दिलचस्पी लेते रहे, और वे और एंगेल्स यूरोप में "इण्टरनेशनल" के अनौपचारिक प्रतिनिधि माने जाते रहे जिनके पास दुनिया भर के समाजवादी लगातार सलाह और मार्गदर्शन के लिए आते रहते थे।

मार्क्स का निजी जीवन और चरित्र

सरसरी तौर पर किये गये मार्क्स के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के इस वर्णन का इससे अच्छा समाहार शायद यही हो कि हम उनकी बेटी एलेनोर के लेखों और लीबनेख़्त के संस्मरणों से कुछ ऐसे उद्धरण प्रस्तुत करें जो मार्क्स के निजी विशिष्ट गुणों और उन कठोर परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं जिनमें मार्क्स जिये और उन्होंने अपना काम किया।

अपनी माँ के नोट्स में से उद्धृत करते हुए एलेनोर मार्क्स कहती हैं – "परिवार के (लन्दन) पहुँचने के कुछ ही समय पश्चात दूसरे बेटे का जन्म हुआ। जब वो लगभग दो वर्ष का था तो उसकी मृत्यु हो गयी। फिर पाँचवें बच्चे, एक नन्ही सी लड़की, का जन्म हुआ। लगभग एक वर्ष की होते–होते ही वह भी बीमार पड़ी और उसकी भी मृत्यु हो गयी। 'तीन दिन तक', मेरी माँ ने लिखा है, 'बेचारी बच्ची मृत्यु से संघर्ष करती रही। उसने इतना कष्ट उठाया... उसका नन्हा सा मृत शरीर पिछले छोटे कमरे रखा रहा; हम सब (अर्थात मेरे माता–पिता, हेलेन डेमुथ, निष्ठावान घरेलू सहायिका, जिसने अपना जीवन मार्क्स, उनके परिवार, और उनके तीन बड़े बच्चों के लिए समर्पित कर दिया था) अगले कमरे

में चले गये, जब रात हुई तो हमने ज़मीन पर ही बिस्तर लगा लिये, जहाँ तीनों जीवित बच्चे भी हमारे साथ ही लेट गये। और हम उस नन्ही परी के लिए रोते रहे जो हमारे पास ही विश्राम कर रही थी, ठण्डी और मृत। उस प्यारी बच्ची की मृत्यु हमारी कठोरतम निर्धनता के समय घटित हुई। हमारे जर्मन मित्र हमारी सहायता नहीं कर पाये; एंगेल्स लन्दन में कुछ साहित्यिक काम खोजने के निष्फल प्रयास के बाद बहुत ही अहितकर शर्तों पर अपने पिता की फ़र्म में क्लर्क के रूप में काम करने के लिए मानचेस्टर जाने को विवश हो गये थे। अर्नेस्ट जोन्स जो इन दिनों हमसे मिलने आते रहते थे और जिन्होंने सहायता का आश्वासन भी दिया था, कुछ नहीं कर सके... अपने मन की पीड़ा से विवश होकर मैं एक फ़्रेंच शरणार्थी के पास गयी जो पास ही रहता था और कभी–कभी हमसे मिलने आता था। मैंने उसे अपनी दारुण दशा बतायी । उसने तुरन्त ही, अत्यन्त मैत्रीपूर्ण दयालुता के साथ, मुझे 2 पाउण्ड दे दिये। उस धन से हमने वह ताबूत ख़रीदा जिसमें अब वह बच्ची शान्तिपूर्वक सो रही है। जब उसका जन्म हुआ था तो मेरे पास उसके लिए पालना नहीं था, और इस अन्तिम विश्राम–स्थल से भी उसे लम्बे समय तक वंचित रहना पड़ा।' लीबनेख़्त लिखते हैं, 'यह एक भीषण समय था, पर फिर भी यह शानदार था।' उस अगले कमरे में (उनके पास दो ही कमरे थे) जहाँ बच्चे उनके चारों तरफ़ खेलते रहते थे, मार्क्स काम करते रहते थे। मैंने सुना है कि कैसे बच्चे उनके पीछे कुर्सियों का ढेर लगाकर एक घोड़ागाड़ी बनाते थे जिसमें मार्क्स को घोड़े की तरह बाँधकर 'चाबुक मारे जाते थे' और यह सब उस समय होता था जब वे अपनी मेज़ पर बैठकर लिख रहे होते थे।"

लीबनेख़्त, जिनका लम्बे समय तक मार्क्स के साथ नित्यप्रति ही सम्पर्क होता था बच्चों के प्रति मार्क्स के असाधारण ममत्व की भी चर्चा करते हैं। "वे सिर्फ़ एक सर्वाधिक ममत्वपूर्ण पिता ही नहीं थे जो घण्टों बच्चों के बीच में बच्चा बना रह सकता था; अपरिचित बच्चे भी उन्हें आकर्षित करते थे, विशेष रूप से दुखी असहाय बच्चे जो उनके सम्पर्क में आते थे... शारीरिक दुर्बलता और असहायता सदैव ही उनमें करुणा और सहानुभूति जगाती थी। अपनी पत्नी को पीटते हुए एक व्यक्ति के लिए तो वे पीट–पीटकर ही मृत्युदण्ड देने का आदेश भी दे सकते थे। अपने आवेशपूर्ण स्वभाव के कारण वे अक्सर ही ख़ुद को, हमें भी 'उलझन' में डाल देते थे। विज्ञान के इस नायक की गहरी संवेदना और बालसुलभ हृदय

को समझने के लिए यह आवश्यक है कि किसी ने मार्क्स को उनके बच्चों के साथ देखा हो। अपने ख़ाली समय में, या टहलने जाते समय वे उन्हें साथ ही रखते थे और उनके साथ धमा–चौकड़ी मचाते हुए खेलते थे – संक्षेप में कहें तो वे बच्चों के बीच में बच्चा ही बन जाते थे... जब उनके अपने बच्चे बड़े हो गये तो उनके नाती–पोतों ने उनकी जगह ले ली। उनकी पहली बेटी जेनी का बड़ा बेटा, जीन या जोनी लोंग्वे, अपने नाना का लड़ैता था। वो उनके साथ जो चाहे कर सकता था और जोनी यह बात जानता था। एक बार जोनी के मन में मार्क्स को बड़ी घोड़ागाड़ी बनाने का नितान्त मौलिक विचार आया जिसके कोचवान की सीट, अर्थात मार्क्स के कन्धों पर वो खुद बैठा गया, जबकि एंगेल्स और मुझे उस घोड़ागाड़ी के घोड़े बनना था। जोत दिये जाने के बाद लम्बी दौड़ शुरू हुई और मार्क्स को तब तक दौड़ना पड़ा जब तक कि उनके माथे से पसीना नहीं बहने लगा, जब भी एंगेल्स या मैं अपनी चाल धीमी करते बेरहम कोचवान का कोड़ा पड़ता, 'शैतान घोड़ों! आगे बढ़ो,' और ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि मार्क्स बिल्कुल बेदम नहीं हो गये – तब कहीं जाकर जोनी को खेल रोकने के लिए मनाया जा सका।"

लीबनेख़्त मार्क्स के स्वभाव पर कुछ रोचक टिप्पणियों के माध्यम से भी प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के लिए उनकी कई बार बिल्कुल पागलों जैसी बालसुलभ शरारतें करने की क्षमता, शतरंज के प्रति उनका लगाव – कैसे वे देर रात तक और अगले पूरे दिन शतरंज खेल सकते थे और कैसे कोई गेम हार जाने पर अपना आपा ही नहीं खो बैठते थे बल्कि घर पर झगडा करने पर भी उतारू हो जाते थे। यही कारण था कि श्रीमती मार्क्स और लेंचें (हेलेन देमुथ) लीबनेख़्त से अनुरोध करती थीं कि 'मूर' के साथ शाम को शतरंज न खेलें।

एक शिक्षक के रूप में मार्क्स की स्पष्टता और क्षमता अद्भुत थी। इस दृष्टि से वे बहुत ही कठोर थे कि वे दूसरों से भी उतनी ही सम्पूर्णता और प्रवीणता की अपेक्षा करते थे जितनी कि स्वयं से; पर साथ ही वे दयालु, धैर्यवान, और सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहने वाले भी थे। जहाँ तक लोकप्रियता का प्रश्न है उन्हें इसकी बिल्कुल परवाह नहीं थी। वे जानते थे कि जनता का विशाल बहुमत फ़िलहाल उन्हें नहीं समझ पायेगा, और उनका एक मनपसन्द कथन यह था – "तुम अपने रास्ते पर चलते रहो, लोगों को बातें बनाने दो।"

मार्क्स के बड़े बेटे, एडगर, एक प्रतिभाशाली परन्तु जन्म से ही दुर्बल बच्चा,

की लन्दन में उस समय मृत्यु हो गयी जब वह लगभग 8 वर्ष का था। "मैं वह दृश्य कभी नहीं भूलूँगा," लीबनेख़्त कहते हैं। सुबकती हुई लेंचें, अपनी दोनों बच्चियों को चिपटाये रह-रहकर झटके सी खाती हुई रोती हुई माँ और भीषण रूप से उत्तेजित मार्क्स जो लगभग क्रोधित मुद्रा में किसी भी सान्त्वना को अस्वीकार कर रहे थे। अन्तिम संस्कार के समय मार्क्स घोड़ागाड़ी में बैठे हुए थे, मौन, अपने हाथों में अपना सर थामे हुए। मैंने उनके माथे पर हाथ फेरते हुए कहा; 'मूर, तुम्हारे पास अभी भी तुम्हारी पत्नी, तुम्हारी बेटियाँ, और हम लोग हैं और हम सब तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।' 'तुम मुझे मेरा बेटा नहीं लौटा सकते!' उन्होंने लगभग कराहते हुए कहा... क़ब्र के पास मार्क्स इतने उत्तेजित हो गये कि मैं उनकी बगल में खड़ा हो गया; मुझे भय था कि कहीं वे ताबूत के पीछे न कूद पड़ें।"

तीस वर्ष बाद, जब उनकी पत्नी की मृत्यु हुई, तो अन्तिम संस्कार के समय एंगेल्स को भी इसी तरह फुर्ती से मार्क्स की बाँह थामनी पड़ी वरना वे उनकी क़ब्र में ही कूद गये होते। मृत्यु से एक वीरतापूर्ण संघर्ष के बाद, मार्क्स की पत्नी की 2 दिसम्बर, 1881 को कैंसर से मृत्यु हो गयी। भयावह कष्टों के बावजूद वे नित्यप्रति के क्रियाकलापों में दिलचस्पी लेती रहीं, और चुटकुलों और उत्साहपूर्ण बातों से परिवार की आशंकाओं को निर्मूल करने का प्रयास करती रहीं। उनकी बेटी एलेनोर कहती है – "जब हमारे प्यारे जनरल (एंगेल्स) आये तो उन्होंने कहा – 'मूर भी नहीं रहे,' जिस पर मुझे बुरा भी लगा, पर वास्तव में ऐसा ही था।" बहुत अधिक परिश्रम और लगभग पूरी रात काम करने की अपनी आदत से मार्क्स ने अपने मूल रूप से काफ़ी मजबूत शरीर की इतनी उपेक्षा की थी कि वे कुछ समय से बीमार ही चल रहे थे। अक्सर उन्हें अपना काम छोड़कर स्वास्थ्य सुधार के लिए भ्रमण पर जाना पड़ता था। उन्होंने अपनी शक्ति और अपना मनोबल आन्दोलन के लिए बचाये रखने का प्रयास किया, पर जनवरी 1883 के प्रारम्भ में जब उनकी सबसे बड़ी बेटी, जेनी भी चल बसीं तो मार्क्स इस सदमे से उबर नहीं पाये।

14 मार्च, 1883 को अपनी अध्ययन वाली आराम कुर्सी में वे भी शान्तिपूर्वक चल बसे। और इस तरह, जैसा कि एंगेल्स ने कहा – "उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के महानतम मस्तिष्क का स्वामी" गुज़र गया, और उसके समाधि-लेख के लिए हम एलेनोर मार्क्स द्वारा चयनित इन शब्दों का साधिकार

प्रयोग कर सकते हैं। –

“...सारे ही मूल तत्व
उसमें कुछ यूँ घुले मिले कि प्रकृति भी उठ खडी हो
और पूरे विश्व से कहे – ‘ये था एक इंसान।’”

मानव मुक्ति का वैज्ञानिक दर्शन और विचारधारा देने वाले विश्व सर्वहारा के महान शिक्षक कार्ल मार्क्स की यह प्रसिद्ध जीवनी गागर में सागर भरने की तरह पाठक के सामने मार्क्स के जीवन की एक तस्वीर पेश करने के साथ ही उनकी प्रमुख कृतियों और शिक्षाओं से परिचय भी कराती चलती है।



राहुल
फ़ाउण्डेशन

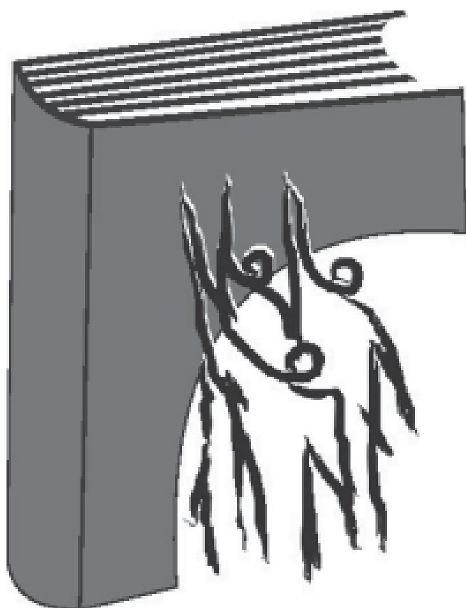
ISBN 978-93-80303-01-7



मूल्य : रु. 25.00

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना



सम्पूर्ण सूचीपत्र
2018

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिनगारी।
घर–घर तक चिनगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन–जन तक पहुँचाना होगा।

दो दशक पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी–सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी–सी दुकान और फ़ुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी–छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर–घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। एक बड़े और एक छोटे प्रदर्शनी वाहन के माध्यम से जनचेतना हिन्दी और पंजाबी क्षेत्र के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला–सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन–संघर्ष–सृजन–प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

हिन्दी क्षेत्र में यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइये, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिये।

सम्पूर्ण सूचीपत्र



परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

1.	**तरुणाई का तराना**/याङ मो		...
2.	**तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट		...
3.	**माँ**/मक्सिम गोर्की		...
4.	**वे तीन**/मक्सिम गोर्की		75.00
5.	**मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की		...
6.	**जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की		...
7.	**मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की		...
8.	**फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की		55.00
9.	**अभागा**/मक्सिम गोर्की		40.00
10.	**बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की		25.00
11.	**असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई		...
12.	**तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव	(दो खण्डों में)	160.00
13.	**गोदान**/प्रेमचन्द		...
14.	**निर्मला**/प्रेमचन्द		...
15.	**पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र		...
16.	**चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र		...
17.	**गृहदाह**/शरत्चन्द्र		70.00
18.	**शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र		...
19.	**इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का		65.00
20.	**इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव		20.00
21.	**दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव		70.00

22.	**वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव	60.00
23.	**मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ग्रीगोरी बकलानोव	40.00
24.	**बख़्तरबन्द रेल 14-69**/व्सेवोलोद इवानोव	30.00
25.	**अश्वसेना**/इसाक बाबेल	40.00
26.	**लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श	50.00
27.	**रिक्शावाला**/लाओ श	65.00
28.	**चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन	55.00
29.	**एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय	30.00
30.	**Mother/***Maxim Gorky*	250.00
31.	**The Song of Youth**/*Yang Mo*	...

कहानियाँ

1.	**श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट)	450.00
2.	**वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ)	60.00

मक्सिम गोर्की

3.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1)	...
4.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2)	...
5.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3)	...
6.	**हिम्मत न हारना मेरे बच्चो**	10.00
7.	**कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी**	...

अन्तोन चेख़व

8.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1)	...
9.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2)	...
10.	**दो अमर कहानियाँ**/लू शुन	...
11.	**श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द	80.00
12.	**पाँच कहानियाँ**/पुश्किन	...
13.	**तीन कहानियाँ**/गोगोल	30.00
14.	**तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच	60.00
15.	**वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव	60.00
16.	**वसन्तागम**/रओ शि	50.00

17. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
18. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
19. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
20. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
21. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
22. **समय के पंख**/कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
23. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
24. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
25. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
26. **दोन की कहानियाँ**/मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
27. **अब इन्साफ़ होने वाला है** ...
(भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन)
(ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/स. **शकील सिद्दीक़ी**
28. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
29. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/मदन मोहन 35.00

कविताएँ

1. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/पाब्लो नेरूदा 60.00
2. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/लैंग्स्टन ह्यूज 60.00
3. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) 160.00
4. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ – बेर्टोल्ट ब्रेष्ट**
(मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल)
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित) 150.00
6. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
7. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
8. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
9. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/होसे मारिया सिसों 25.00

10.	**इन्तिफ़ादा :** फ़लस्तीनी कविताएँ/स. रामकृष्ण पाण्डेय		...
11.	**लहू है कि तब भी गाता है**/पाश		...
12.	**लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़लस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems)		60.00
13.	**पाठान्तर**/विष्णु खरे		50.00
14.	**लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/विष्णु खरे		60.00
15.	**ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ		60.00
16.	**बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी		50.00
17.	**सामान की तलाश**/असद ज़ैदी		50.00
18.	**कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/शशिप्रकाश		50.00
19.	**पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश		75.00
20.	**सात भाइयों के बीच चम्पा**/कात्यायनी	(पेपरबैक)	...
		(हार्डबाउंड)	125.00
21.	**इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी		60.00
22.	**जादू नहीं कविता**/कात्यायनी	(पेपरबैक)	...
		(हार्डबाउंड)	200.00
23.	**फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी		80.00
24.	**राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी		15.00
25.	**यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार		50.00
26.	**यह जो वक्त है**/कपिलेश भोज		60.00
27.	**देश एक राग है**/भगवत रावत		...
28.	**बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर		60.00
29.	**दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय		120.00
30.	**देखते न देखते**/मलय		65.00
31.	**असम्भव की आँच**/मलय		100.00
32.	**इच्छा की दूब**/मलय		90.00
33.	**इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार		90.00
34.	**तो**/शैलेय		75.00

नाटक

1.	**करवट**/मक्सिम गोर्की	40.00
2.	**दुश्मन**/मक्सिम गोर्की	35.00

3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी (पेपरबैक) 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यन्त्ररत मृतात्माओं के बीच**
(साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य-विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/
गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/
बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00

5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुख़ोम्लीन्स्की ...

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**/कात्यायनी, सत्यम 25.00



राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1.	**नौजवानों से दो बातें**/पीटर क्रोपोटकिन	15.00
2.	**क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/भगतसिंह	15.00
3.	**मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह	15.00
4.	**बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह	15.00
5.	**जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह	15.00
6.	**भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह	15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1.	**भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़**/स. सत्यम	350.00
2.	**शहीदेआज़म की जेल नोटबुक**/भगतसिंह	100.00
3.	**विचारों की सान पर**/भगतसिंह	50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1.	**बहरों को सुनाने के लिए**/एस. इरफ़ान हबीब (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)	...
2.	**क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा	15.00
3.	**भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र	20.00
4.	**यश की धरोहर**/ भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर	50.00
5.	**संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा	80.00
6.	**शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/स. डॉ. हरदीप सिंह	40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है**
   ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 60.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 60.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 10.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 15.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 15.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 15.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 15.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 10.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00

3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की 5.00
4. **मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 5.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** 30.00
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 10.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 75.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 100.00

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स 100.00
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/मार्क्स-एंगेल्स 25.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स 150.00
4. **फ्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उजरती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ्रेडरिक एंगेल्स 20.00

11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन 60.00
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन 40.00
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन 15.00
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन ...
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन 20.00
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन 20.00
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ**/जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00
34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...
35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...
36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/माओ त्से-तुङ 35.00
37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/माओ त्से-तुङ 70.00
38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़** / माओ त्से-तुङ 15.00
39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

1.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** नयी	300.00
2.	**ख्रुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र	300.00
3.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी)	160.00
4.	**पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग	10.00
5.	**कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/डी. रियाज़ानोव (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)	100.00
6.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/डेविड गेस्ट	...
7.	**महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति : चुने हुए दस्तावेज़ और लेख** (खण्ड 1)	35.00
8.	**इतिहास ने जब करवट बदली**/विलियम हिण्टन	25.00
9.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/वी. अदोरात्स्की	50.00
10.	**अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन**/अल्बर्ट रीस विलियम्स (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)	90.00
11.	**सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस	50.00

राहुल साहित्य

1.	**तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन	40.00
2.	**दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन	...
3.	**वैज्ञानिक भौतिकवाद**/राहुल सांकृत्यायन	65.00
4.	**राहुल निबन्धावली**/राहुल सांकृत्यायन	50.00
5.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

परम्परा का स्मरण

1.	**चुनी हुई रचनाएँ**/गणेशशंकर विद्यार्थी	100.00
2.	**सलाखों के पीछे से**/गणेशशंकर विद्यार्थी	30.00
3.	**ईश्वर का बहिष्कार**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
4.	**लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी	20.00
5.	**धर्म का ढकोसला**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
6.	**स्त्रियों की स्वाधीनता**/राधामोहन गोकुलजी	30.00

जीवनी और संस्मरण

1.	**कार्ल मार्क्स जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	25.00
2.	**फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	...
3.	**कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख**	...
4.	**अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/एल. काताशेवा	30.00
5.	**लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा	70.00
6.	**लेनिन विषयक कहानियाँ**	75.00
7.	**लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/लीदिया फ़ोतियेवा	...
8.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

विविध

1.	**फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक	30.00
2.	**पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर	100.00
3.	**सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर	....

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1.	**A Contribution to the Critique of Political Economy**	100.00
2.	**The Civil War in France**	80.00
3.	**The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte**	40.00
4.	**Critique of the Gotha Programme**	25.00
5.	**Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy**	25.00
6.	**The Poverty of Philosophy**	80.00
7.	**Wages, Price and Profit**	35.00
8.	**Class Struggles in France**	50.00

FREDERICK ENGELS

9.	**The Peasant War in Germany**	70.00
10.	**Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy**	65.00
11.	**On Capital**	55.00
12.	**The Origin of the Family, Private Property and the State**	100.00
13.	**Socialism: Utopian and Scientific**	60.00
14.	**On Marx**	20.00
15.	**Principles of Communism**	5.00

MARX and ENGELS

16.	**Historical Writings** (Set of 2 Vols.)	700.00
17.	**Manifesto of the Communist Party**	50.00
18.	**Selected Letters**	40.00

V. I. LENIN

19.	**Theory of Agrarian Question**	160.00
20.	**The Collapse of the Second International**	25.00
21.	**Imperialism, the Highest Stage of Capitalism**	80.00
22.	**Materialism and Empirio-Criticism**	150.00

23.	**Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution**	55.00
24.	**Capitalism and Agriculture**	30.00
25.	**A Characterisation of Economic Romanticism**	50.00
26.	**On Marx and Engels**	35.00
27.	**“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder**	40.00
28.	**Party Work in the Masses**	55.00
29.	**The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky**	40.00
30.	**One Step Forward, Two Steps Back**	...
31.	**The State and Revolution**	...

MARX, ENGELS and LENIN

32.	**On the Dictatorship of Proletariat,** ***Questions and Answers***	50.00
33.	**On the Dictatorship of the Proletariat:** ***Selected Expositions***	10.00

PLEKHANOV

34.	**Fundamental Problems of Marxism**	35.00

J. STALIN

35.	**Marxism and Problems of Linguistics**	25.00
36.	**Anarchism or Socialism?**	25.00
37.	**Economic Problems of Socialism in the USSR**	30.00
38.	**On Organisation**	15.00
39.	**The Foundations of Leninism**	40.00
40.	**The Essential Stalin** *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)	175.00

LENIN and STALIN

41.	**On the Party**	...

MAO TSE-TUNG

42.	**Five Essays on Philosophy**	50.00
43.	**A Critique of Soviet Economics**	70.00
44.	**On Literature and Art**	80.00

45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** ...

46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** ...

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 275.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 160.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* ...
4. **Socialism and Ethics**/*Howard Selsam* ...
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)**/** *Howard Selsam* 75.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00
7. **From Marx to Mao Tse-tung /**George Thomson ...
8. **Capitalism and After/**George Thomson ...
9. **The Human Essence/**George Thomson 65.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* 125.00
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00
12. **The Lessons of the Paris Commune/** *Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) ...
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov ...
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* ...

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle (Red Papers 7)** 175.00

2. **Preface of Class Struggles in the USSR** / *Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University / *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University** / *Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** / *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** / *William Hinton* ...
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** / *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution /** *Iris Hunter* ...

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 */ Joshua S. Horn* ...
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China /*Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* ...
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) 35.00

CONTEMPORARY ISSUES

1. **Caste and Class: A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 15.00

2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism?** / *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?**
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan* 15.00

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 20.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* ...
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** /*Mary Lou Greenberg*...

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* ...
2. **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* 15.00



अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
(द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
(तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद**
(चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना

एक वैचारिक मुहिम है
भविष्य-निर्माण का एक प्रोजेक्ट है
वैकल्पिक मीडिया की एक सशक्त धारा है।

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फ़ाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास, शहीद भगतसिंह यादगारी प्रकाशन, दस्तक प्रकाशन और प्रांजल आर्ट पब्लिशर्स की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्रोतों – सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।



अनुराग ट्रस्ट

1.	**बच्चों के लेनिन**	35.00
2	**Stories About Lenin**	35.00
3.	**सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
4.	**औज़ारों की कहानियाँ**	20.00
5.	**गुड़ की डली**/कात्यायनी	20.00
6.	**फूल कुंडलाकार क्यों होते हैं**/सनी	20.00
7.	**धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव	120.00
8.	**कजाकी**/प्रेमचन्द	35.00
9.	**नीला प्याला**/अरकादी गैदार	40.00
10.	**गड़रिये की कहानियाँ**/क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
11.	**चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/अ. मित्यायेव	35.00
12.	**अन्धविश्वासी शेकी टेल**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
13.	**चलता-फिरता हैट**/एन. नोसोव, होल्कर पुक्क	20.00
14.	**चालाक लोमड़ी** (लोककथा)	20.00
15.	**दियांका-टॉमचिक**	20.00
16.	**गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
17.	**गुफा मानवों की कहानियाँ**/मैरी मार्स	...
18.	**हम सूरज को देख सकते हैं**/मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
19.	**मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
20.	**नन्हे आर्थर का सूरज**/हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा	20.00
22.	**आकाश में मौज-मस्ती**/चिनुआ अचेबे	20.00
23.	**ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन	40.00
24.	**एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की	20.00
25.	**बहादुर**/अमरकान्त	15.00
26.	**बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/शस्या हर्ष	...

27. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/मक्सिम गोर्की 15.00
28. **नन्हा राजकुमार**/आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
29. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/मक्सिम गोर्की 30.00
30. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
32. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
33. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
34. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
35. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00
36. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
37. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
38. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
39. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
40. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
41. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
42. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
43. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
44. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
45. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
46. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
47. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
48. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
49. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
50. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
51. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल
(नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 30.00
52. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा
(नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
53. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
54. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
55. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00

56.	**हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक	25.00
57.	**घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव	10.00
58.	**बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव	20.00
59.	**मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन	35.00
60.	**पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की	20.00
61.	**कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय	30.00
62.	**मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव	30.00
63.	**सदानन्द की छोटी दुनिया**/सत्यजीत राय	15.00
64.	**छत पर फँस गया बिल्ला**/विताउते जिलिन्सकाइते	35.00
65.	**गोलू के कारनामे**/रामबाबू	25.00
66.	**दो साहसिक कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	15.00
67.	**आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
68.	**कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क	20.00
69.	**रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
70.	**अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क	...
71.	**नये ज़माने की परीकथाएँ**/होल्गर पुक्क	25.00
72.	**किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन	15.00
73.	**पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन)/ कमला पाण्डेय	30.00
74.	**यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण)/ कमला पाण्डेय	100.00
75.	**हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ)/ कमला पाण्डेय	60.00
76.	**कालमन्थन** (उपन्यास)/ कमला पाण्डेय	60.00

ਪੰਜਾਬੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਦਸਤਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ ਦਾ ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ ਨਾਵਲ (ਤਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ)

1. ਮੇਰਾ ਬਚਪਨ	130.00
2. ਮੇਰੇ ਵਿਸ਼ਵ-ਵਿਦਿਆਲੇ	100.00
3. ਮੇਰੇ ਸ਼ਗਿਰਦੀ ਦੇ ਦਿਨ	200.00

4. ਪ੍ਰੇਮ, ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ / ਕਾਤਿਆਈਨੀ	20.00
5. ਥੀਏਟਰ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਤਰਕਸ਼ਾਸਤਰ / ਬ੍ਰੈਖ਼ਤ	15.00
6. ਆਈਜੇਂਸਤਾਈਨ ਦਾ ਫਿਲਮ ਸਿਧਾਂਤ	15.00
7. ਮਜ਼ਦੂਰ ਜਮਾਤੀ ਸੰਗੀਤ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ	10.00
8. ਪਹਿਲਾ ਅਧਿਆਪਕ / ਚੰਗੇਜ਼ ਆਇਤਮਾਤੋਵ (ਨਾਵਲ)	25.00
9. ਸ਼ਾਂਤ ਸਰਘੀ ਵੇਲਾ / ਬੋਰਿਸ ਵਾਸੀਲਿਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
10. ਭਾਂਜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਫ਼ਦੇਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	100.00
11. ਫੌਲਾਦੀ ਹੜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਸਰਾਫ਼ੀਮੋਵਿਚ (ਨਾਵਲ)	100.00
12. ਇਕਤਾਲ਼ੀਵਾਂ / ਬੋਰਿਸ ਲਵਰੇਨਿਓਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
13. ਮਾਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ (ਨਾਵਲ)	180.00
14. ਪੀਲ਼ੇ ਦੈਂਤ ਦਾ ਸ਼ਹਿਰ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	80.00
15. ਸਾਹਿਤ ਬਾਰੇ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	200.00
16. ਅਸਲੀ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਹਾਣੀ / ਬੋਰਿਸ ਪੋਲੇਵਾਈ (ਨਾਵਲ)	200.00
17. ਅੱਠੇ ਪਹਿਰ (ਕਹਾਣੀਆਂ)	125.00
18. ਬਘਿਆੜਾਂ ਦੇ ਵੱਸ / ਬਰੂਨੋ ਅਪਿਤਜ (ਨਾਵਲ)	100.00
19. ਮੀਤ੍ਰਿਆ ਕੋਕੋਰ / ਮੀਹਾਇਲ ਸਾਦੋਵਿਆਨੋ (ਨਾਵਲ)	100.00
20. ਇਨਕਲਾਬ ਲਈ ਜੂਝੀ ਜਵਾਨੀ	150.00
21. ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਦਿਲ ਆਪਣਾ ਮੈਂ / ਵ. ਸੁਖੋਮਲਿੰਸਕੀ	150.00
22. ਫਾਸੀ ਦੇ ਤਖ਼ਤੇ ਤੋਂ / ਜੂਲੀਅਸ ਫੂਚਿਕ (ਨਾਵਲ)	50.00
23. ਭੁੱਬਲ / ਫ਼ਰੰਜ਼ਦ ਅਲੀ (ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਨਾਵਲ)	200.00
24. ਸਭ ਤੋਂ ਖਤਰਨਾਕ... (ਪਾਸ਼ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਉਪਲੱਬਧ ਸ਼ਾਇਰੀ)	200.00
25. ਧਰਤੀ ਧਨ ਨਾ ਆਪਣਾ / ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦਰ	250.00

ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਯਾਦਗਾਰੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

1. ਉਜਰਤ, ਕੀਮਤ ਅਤੇ ਮੁਨਾਫਾ / ਮਾਰਕਸ	30.00
2. ਉਜਰਤੀ ਕਿਰਤ ਅਤੇ ਸਰਮਾਇਆ / ਮਾਰਕਸ	20.00
3. ਸਿਆਸੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ ਵਿੱਚ ਯੋਗਦਾਨ / ਮਾਰਕਸ	125.00
4. ਲੂਈ ਬੋਨਾਪਾਰਟ ਦੀ ਅਠਾਰਵੀਂ ਬਰੂਮੇਰ / ਮਾਰਕਸ	50.00
5. ਪੂੰਜੀ ਦੀ ਉਤਪਤੀ / ਮਾਰਕਸ	45.00
6. ਰਿਹਾਇਸ਼ੀ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
7. ਫਿਊਰਬਾਖ : ਪਾਦਰਥਵਾਦੀ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ / ਮਾਰਕਸ-ਏਂਗਲਜ਼	60.00
8. ਜਰਮਨੀ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ / ਏਂਗਲਜ਼	50.00
9. ਮਾਰਕਸ ਦੇ "ਸਰਮਾਇਆ" ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	60.00
10. ਫਰਾਂਸ ਅਤੇ ਜਰਮਨੀ 'ਚ ਕਿਸਾਨੀ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	20.00
11. ਸੋਸ਼ਲਿਜ਼ਮ : ਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਯੂਟੋਪੀਆਈ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
12. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	10.00
13. ਲੁਡਵਿਗ ਫਿਊਰਬਾਖ ਅਤੇ ਕਲਾਸੀਕੀ ਜਰਮਨ ਦਰਸ਼ਨ ਦਾ ਅੰਤ / ਏਂਗਲਜ਼	30.00
14. ਟੱਬਰ, ਨਿੱਜੀ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਰਾਜ ਦੀ ਉੱਤਪਤੀ / ਏਂਗਲਜ਼	65.00
15. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ / ਲੈਨਿਨ	35.00
16. ਰਾਜ ਅਤੇ ਇਨਕਲਾਬ / ਲੈਨਿਨ	50.00
17. ਦੂਜੀ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਦਾ ਪਤਣ / ਲੈਨਿਨ	45.00
18. ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦ / ਲੈਨਿਨ	15.00
19. ਰਾਜ / ਲੈਨਿਨ	10.00
20. ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ, ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਪੜਾਅ / ਲੈਨਿਨ	70.00
21. ਇੱਕ ਕਦਮ ਅੱਗੇ ਦੋ ਕਦਮ ਪਿੱਛੇ / ਲੈਨਿਨ	125.00
22. ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰੀਏ / ਲੈਨਿਨ	65.00
23. ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਕਲਾ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ	150.00
24. ਸਮਾਜਵਾਦ ਅਤੇ ਜੰਗ / ਲੈਨਿਨ	45.00
25. ਖੱਬੇ ਪੱਖੀ ਕਮਿਊਨਿਜ਼ਮ ਇੱਕ ਬਚਗਾਨਾ ਰੋਗ / ਲੈਨਿਨ	65.00
26. ਅਸੀਂ ਜਿਹੜਾ ਵਿਰਸਾ ਤਿਆਗਦੇ ਹਾਂ / ਲੈਨਿਨ	25.00
27. ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਭਗੌੜਾ ਕਾਊਤਸਕੀ / ਲੈਨਿਨ	70.00
28. ਆਰਥਕ ਰੋਮਾਂਚਵਾਦ ਦਾ ਚਰਿੱਤਰ ਚਿੱਤਰਣ / ਲੈਨਿਨ	50.00

29.	ਸੁਤੰਤਰ ਵਪਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਮਾਰਕਸ, ਏਂਗਲਜ਼, ਲੈਨਿਨ	10.00
30.	ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਦੀਆਂ ਨੀਹਾਂ / ਸਟਾਲਿਨ	20.00
31.	ਫ਼ਲਸਫਾਨਾ ਲਿਖਤਾਂ / ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ	25.00
32.	ਸੋਵੀਅਤ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ / ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ	60.00
33.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਮਸਲੇ / ਪਲੈਖਾਨੋਵ	40.00
34.	ਰਾਜਨੀਤਕ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਮੂਲ ਸਿਧਾਂਤ	60.00
35.	ਫਿਲਾਸਫੀ ਕੋਈ ਗੋਰਖਧੰਦਾ ਨਹੀਂ	10.00
36.	ਦਵੰਦਵਾਦ ਜ਼ਰੀਏ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ	10.00
37.	ਇਤਿਹਾਸ ਨੇ ਜਦ ਕਰਵਟ ਬਦਲੀ	40.00
38.	ਇਨਕਲਾਬ ਅੰਦਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
39.	ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ ਦੀ ਅਮਿੱਟ ਦੇਣ	125.00
40.	ਚੀਨ ਵਿੱਚ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਮਾਓ ਦਾ ਇਨਕਲਾਬੀ ਵਿਰਸਾ	60.00
41.	ਮਾਓਵਾਦੀ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਵਾਦ ਦਾ ਭਵਿੱਖ	60.00
42.	ਲੈਨਿਨ ਦੀ ਜੀਵਨ ਕਹਾਣੀ	100.00
43.	ਅਡੋਲ ਬਾਲਸ਼ਵਿਕ ਨਤਾਸ਼ਾ	30.00
44.	ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਏਂਗਲਜ਼ ਆਪਣੇ ਸਮਕਾਲੀਆਂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਵਿੱਚ	75.00
45.	ਪੈਰਿਸ ਕਮਿਊਨ ਦੀ ਅਮਰ ਕਹਾਣੀ	10.00
46.	ਬੁਝ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਅਕਤੂਬਰ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਮਸ਼ਾਲ	10.00
47.	ਦਹਿਸ਼ਤਗਰਦੀ ਬਾਰੇ ਭਰਮ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥ	10.00
48.	ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਅਤੇ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ	10.00
49.	ਜੰਗਲਨਾਮਾ : ਇੱਕ ਰਾਜਨੀਤਕ ਪੜਚੋਲ	10.00
50.	ਭਾਰਤੀ ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਵਿਕਾਸ	20.00
51.	ਅਮਿੱਟ ਹਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਸੰਗਰਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਚਿਣਗਾਂ	10.00
52.	ਸਮਾਜਵਾਦ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ, ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਦੀ ਮੁੜ ਬਹਾਲੀ ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
53.	ਕਿਉਂ ਮਾਓਵਾਦ ?	10.00
54.	ਸੋਵੀਅਤ ਯੂਨੀਅਨ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਝੂਠ	10.00
55.	ਰਿਜ਼ਰਵੇਸ਼ਨ : ਪੱਖ, ਵਿਪੱਖ ਅਤੇ ਤੀਸਰਾ ਪੱਖ	5.00
56.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਅਤੇ ਜਾਤ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ	20.00

57. ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਬਾਰੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
58. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸੰਵਿਧਾਨ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
59. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ : ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 10.00
60. ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ / ਪ੍ਰੋ. ਇਰਫ਼ਾਨ ਹਬੀਬ 10.00
61. ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਨੀਤੀਆਂ ਦੇ 18 ਸਾਲ 5.00
62. ਚੋਰ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਅਤੇ ਅਯਾਸ਼ ਨੇਤਾਸ਼ਾਹੀ 5.00
63. ਧਾਰਮ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨ / ਡਾਈਸਨ ਕਾਰਟਰ 60.00
64. ਫਾਸੀਵਾਦ ਕੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ਼ ਕਿਵੇਂ ਲੜੀਏ ? 15.00
65. ਆਈਨਸਟੀਨ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਰੋਕਾਰ 10.00
66. ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨਾਲ਼ ਦੋ ਗੱਲਾਂ / ਪੀਟਰ ਕ੍ਰੋਪੋਟਕਿਨ 10.00
67. ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ
(ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ) 30.00
68. ਅਜਿਹਾ ਸੀ ਸਾਡਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
69. ਮੈਂ ਨਾਸਤਿਕ ਕਿਉਂ ਹਾਂ ? / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 10.00
70. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਿਹਾ... / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 5.00
71. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਉਸਦੇ ਸਾਥੀਆਂ
ਦਾ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਵਿਕਾਸ / ਪ੍ਰੋ. ਬਿਪਨ ਚੰਦਰਾ 10.00
72. ਇਨਕਲਾਬੀ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤਕ ਵਿਕਾਸ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
73. ਸ਼ਹੀਦ ਚੰਦਰ ਸ਼ੇਖਰ ਆਜ਼ਾਦ / ਭਗਵਾਨ ਦਾਸ ਮਹੌਰ 10.00
74. ਗਦਰੀ ਸੂਰਬੀਰ / ਪ੍ਰੋ. ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ 10.00
75. ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ 20.00
76. ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ 5.00
77. ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੌਜਵਾਨ ਨਵੀਂ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕਿੱਥੋਂ ਕਰਨ ? 10.00
78. ਸੋਧਵਾਦ ਬਾਰੇ 5.00
79. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਸਾਰ ਦੀ ਲੋੜ ਕਿਉਂ ? / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 15.00
80. ਵਧਦੀ ਅਬਾਦੀ 15.00
81. ਯੁੱਗ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੇ ਹਨ ? / ਡਾ. ਅੰਮ੍ਰਿਤ 10.00
82. ਧਰਮ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ 30.00
83. ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਮਹੱਤਵ 20.00
84. ਇੱਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਦਾ ਜਨਮ / ਗੈਨਰਿਖ ਵੋਲਕੋਵ 100.00
85. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਨਵਉਦਾਰਵਾਦ ਦੇ ਦੋ ਦਹਾਕੇ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 20.00

86. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਦਾ ਕਲਾ ਦਰਸ਼ਨ 200.00
87. ਸਤਾਲਿਨ - ਇੱਕ ਜੀਵਨੀ / ਰਾਹੁਲ ਸਾਂਕਰਤਾਇਨ 150.00
88. ਪੋਰਨੋਗ੍ਰਾਫੀ : ਇਕ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾ ਕੋਹੜ / ਅਜੇ ਪਾਲ 10.00
89. ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਅਧਾਰ / ਸੀਤਾ 10.00

ਅਨੁਰਾਗ ਟਰੱਸਟ (ਬੱਚਿਆਂ ਲਈ)

1. ਇਵਾਨ / ਵਲਾਦੀਮੀ ਬਗਾਮਲੋਵ 35.00
2. ਵਾਂਕਾ / ਅਨਤੋਨ ਚੈਖੋਵ 10.00
3. ਕਿਸਮਤ ਆਪੋ-ਆਪਣੀ / ਜੈਨੇਂਦਰ 20.00
4. ਕੋਹੇਕਾਫ਼ ਦਾ ਕੈਦੀ / ਤਾਲਸਤਾਏ 30.00
5. ਛੱਤ ’ਤੇ ਫਸ ਗਿਆ ਬਿੱਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਹਾਣੀਆਂ 20.00
6. ਅਜੀਬੋ-ਗਰੀਬ ਕਿੱਸੇ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
7. ਦੋ ਹਿੰਮਤੀ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 15.00
8. ਨਵੇਂ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੀਆਂ ਪਰੀ-ਕਥਾਵਾਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
9. ਅਸੀਂ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ / ਮਿਕੋਲ ਗਿੱਲ 10.00
10. ਗੁਫਾ ਮਾਨਵਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਮੈਰੀ ਮਾਰਸ 20.00
11. ਕਿੱਸਾ ਇਹ ਕਿ ਇੱਕ ਪੇਂਡੂ ਨੇ ਦੋ ਅਫ਼ਸਰ ਸ਼ਹਿਰੀ ਅਫਸਰਾਂ ਦਾ ਢਿੱਡ ਕਿਵੇਂ ਭਰਿਆ / ਮਿਖਾਈਲ ਸ਼ਚੇਦ੍ਰਿਨ 15.00
12. ਸਦਾਨੰਦ ਦੀ ਛੋਟੀ ਦੁਨੀਆਂ / ਸੱਤਿਆਜੀਤ ਰਾਏ 10.00
13. ਬਾਜ਼ ਦਾ ਗੀਤ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
14. ਬੱਸ ਇੱਕ ਯਾਦ / ਲਿਓਨਿਦ ਆਂਦਰੇਯੇਵ 10.00
15. ਦਾਦਾ ਅਰਖ਼ੀਪ ਅਤੇ ਲਿਓਨਕਾ / ਗੋਰਕੀ 20.00
16. ਦਾਨਕੋ ਦਾ ਬਲ਼ਦਾ ਹੋਇਆ ਦਿਲ / ਗੋਰਕੀ 10.00
17. ਘਰ ਦੀ ਲਲਕ / ਨਿਕੋਲਾਈ ਤੇਲੇਸ਼ੋਵ 20.00
18. ਗੁੱਲੀ-ਡੰਡਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
19. ਹਾਰ ਦੀ ਜਿੱਤ / ਸ਼ੁਦਰਸ਼ਨ 10.00
20. ਹਰਾਮੀ / ਮਿਖ਼ਾਇਲ ਸ਼ੋਲੋਖ਼ੋਵ 20.00
21. ਕਾਬੁਲੀਵਾਲ਼ਾ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00
22. ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਸਾਥੀ / ਸੇਰੇਗਈ ਮਿਖਾਲਕੋਵ 10.00
23. ਪੋਸਟਮਾਸਟਰ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00

24. ਰਾਮਲੀਲਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
25. ਸੇਮਾਗਾ ਕਿਵੇਂ ਫੜਿਆ ਗਿਆ / ਗੋਰਕੀ 10.00
26. ਤੁਰਦਾ-ਫਿਰਦਾ ਟੋਪ / ਐੱਨ. ਨੋਸੋਵ 10.00
27. ਬੇਜਿਨ ਚਰਾਗਾਹ / ਇਵਾਨ ਤੁਰਗੇਨੇਵ 20.00
28. ਉਲਟਾ ਰੁੱਖ / ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਚੰਦਰ 35.00
29. ਵੱਡੇ ਭਾਈ ਸਾਹਬ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
30. ਇੱਕ ਛੋਟੇ ਮੁੰਡੇ ਅਤੇ ਕੁੜੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਜਿਹੜੇ ਬਰਫ਼ੀਲੀ ਠੰਡ 'ਚ ਕਾਂਬੇ ਨਾਲ਼ ਮਰੇ ਨਹੀਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
31. ਬਹਾਦਰ / ਅਮਰਕਾਂਤ 10.00
32. ਹਿਰਨੋਟਾ / ਦਮਿਤਰੀ ਮਾਮਿਨ ਸਿਬਿਰੇਆਕ 10.00

——::——

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि ...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह

जनचेतना

मुख्य केन्द्र : **डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020**

फ़ोन : 0522-4108495

अन्य केन्द्र :

- 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001, फ़ोन : 7398783835
- दिल्ली : 9999750940
- नियमित स्टॉल : कॉफ़ी हाउस के पास, हज़रतगंज, लखनऊ शाम 5 से 8 बजे तक

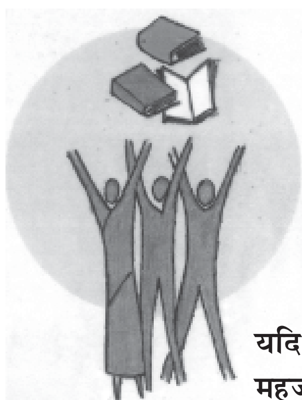
सहयोगी केन्द्र

- जनचेतना पुस्तक विक्रय केन्द्र, दुकान नं. 8, पंजाबी भवन, लुधियाना (पंजाब) फ़ोन : 09815587807

ईमेल : info@janchetnabooks.org
वेबसाइट : www.janchetnabooks.org

हमारी बुकशॉप और प्रदर्शनियों से पुस्तकें लेने के अलावा आप हमसे डाक से भी किताबें मँगा सकते हैं। हमारी वेबसाइट पर जाकर पुस्तक सूची से पुस्तकें चुनें और ईमेल या फोन से हमें ऑर्डर भेज दें। आप मनीऑर्डर या चेक से या सीधे हमारे बैंक खाते में भुगतान कर सकते हैं। आप वेबसाइट पर दिये Instamojo के लिंक से भी भुगतान कर सकते हैं। हमारी किताबें आप Amazon और Flipkart से भी ऑनलाइन मँगा सकते हैं।

बैंक खाते का विवरण:
ACC. NAME: JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI
Acc. No. 0762002109003796
Bank: Punjab National Bank



यदि आपको महज़ मनोरंजन चाहिए,
महज़ नशे की एक ख़ुराक,
दिल को बहलाने के लिए एक ख़याल
तो नहीं हैं ऐसी किताबें हमारे पास।
हम ऐसी किताबें लेकर आये हैं
जो आपकी मोहनिद्रा झकझोरकर तोड़ दें,
जो आज के हालात पर
आपको सोचने के लिए मजबूर कर दें।
हम किताबें नहीं
लड़ने की ज़िद
और हालात की बेहतरी की उम्मीदें
लेकर आये हैं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं।
हम लेकर आये हैं
एक सार्थक, स्वाभिमानी, मुक्त जीवन की तड़प।
किताबें नहीं
हम असली इंसान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं।

जनचेतना

एक सांस्कृतिक मुहिम
एक वैचारिक प्रोजेक्ट
वैकल्पिक मीडिया का एक मॉडल